वर्ष-25 श्रावण-भादवा अगस्त 2020 अंक-8

आर.एन.आई.नं. 0048570/29/30/982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं. एस.डी.08/2018-2020

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

मूल्य 10/- रुपये

मासिक

आगमोद्धारक

महापर्व
पर्युषण विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

**अपनी भूलों पर पश्चाताप करना आत्मा को पवित्र बनाना है। जो भूल न करें वह भगवान। जो भूल करके माफी मांगे वह इन्सान। जो भूल को भूल न माने वह बेईमान। जो भूल करके ऊपर से अहंकार करें वह शैतान। पांच पापों से सजाया है जिसने जीवन। वह मानव से शैतान बन बैठा है। याद रहे हर कली में फूल का अरमान छिपा बैठा है। हर मानव में भगवान छिपा बैठा है।*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जीवियं चेव रुवं च, विज्जुसंपायचंचलं।
जत्थ तं मुज्झसि रायं, पेच्चत्थं नाव बुज्झसि॥

जिससे तुम मुर्च्छित हो रहे हो, वह जीवन और रुप विद्युत संपात की तरह चंचल है। हे राजन ! परलोक में क्या हितकर है, यह क्यों नहीं समझाते ?

- उत्तरा. सूत्र, 18.13

पाथेय

हे मधुर स्वामी ! मेरे हृदय से दूर कर दो यह पृथकता बोध जो हम दोनों को बना रखता है विभक्त। यद्यपि जब तक यह अभिव्यक्त जगत रहेगा, इस मैं की रहेगी एक आवश्यकता एवं उपयोगिता तुम्हारे प्राकट्य हेतु इसको मिटा देना या दुर्बल कर देना वस्तुतः मिटा देना है, पूर्णतः या अंशतः तुम्हारे अविर्भाव के साधनों को। किंतु तुमसे पृथक यह मैं एक निरी भ्रान्त धारणा है। तुमसे रहित इस मैं का नहीं है कोई अर्थ। प्रभु मेरी सत्ता में से मैं की इस भ्रान्ति को मिटा दो जिससे तुम्हारी यह सेविका निर्मल सक्षम एवं एक निष्ठ होकर प्रतिफल तुम्हें कर दे, यह सब कुछ अर्पण, जो वस्तुतः तुम्हारा है। मैं अन्तर की पूर्ण नीरवता मैं देख सकूं स्पष्टइस विशाल अज्ञान को और फिर सदैव के लिए कर दें इसे समूल नष्ट। प्रभु ! मेरे हृदय से इस अन्ध परछाई को निकाल फेंको और अपनी शुभ ज्योति को सर्वत्र विकीर्ण कर प्रतिष्ठित कर दो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-25 श्रावण-भादवा अगस्त 2020 अंक-8

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- क्षमा की कालजयी संस्कृति मानव की महानता की प्रतीक (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- करुण भावना : सबके सुख-दुःख का बोध...आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.6

5- क्षमादिन बने राष्ट्रीय त्यौहार : क्षमा वीरस्य भूषणम्- सुनील काला, पर्युषण से पहले- 7-8

6- मैं नागश्री- श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म., पर्युषण पर्व.... 9-10

7- क्षमा को बना लो आदत, जो मेरा नहीं....- दिपेश शाह 11-12

8- बिटिया रानी...!, पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी ''राजहंस'' 13

9- जैन आचार्य एवं सूरी पद, स्वतंत्राता दिवस की हार्दिक शुभकामना 14

10-पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा. 15-16

11-पर्युषण : विरक्त और वैराग्य का पर्व 17-20

12-इस पर्युषण पर प्रतिष्ठ की प्रतिस्पर्द्धा के बजाए वैचारिक प्रदूषण का करे प्रक्षालन, आम 21-22

13-जैन रसोई पद्धति का वैज्ञानिक महत्व, सव्व कला धम्मकला जिणाई 23-25

14-पर्वाधिराज का दिव्य संदेश, माँ 26

15-जैनाचार्य श्री विजय राजतिलकसूरीश्वरजी 27

16-क्षमापर्व : खुद से भी मांगे माफी 28

17-भीतर की प्यास पानी से नहीं बुझेगी- शिल्पा बाफना, क्षमा सच्चे अर्थो में.... 29-30

18-आगमोद्धारक भविष्य फल- अगस्त-2020- अनु दीपक जैन 31

19-वर्गपहेली- 304 - जयंतीलाल जैन 32

20-ज्ञान गंगोत्री- 304- पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म. 33

21-शासन-समाचार+ आपने कभी ख्याल किया.... आशय जैन 34-41

22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है 42

संपादकीय

क्षमा की कालजयी संस्कृति मानव की महानता की प्रतीक

पुरुषार्थ *और आत्म विश्वास को जाग्रत करनेवाला महापर्व पर्युषण वर्तमान युग मे भौतिकता की आंधी में डूबे मानव की अपरिग्रह का संदेश देनेवाला यह पर्व, स्वार्थ भौगलिप्ता में लिप्त मनुष्य को शांतिमय आशावान और तात्विक जीवन दर्शन जीने का संदेश देनेवाला यह महापर्व प्रतिवर्ष हमारे सम्मुख प्रस्तुत होकर एक प्रहरी की तरह हमें सरंक्षण प्रदान करने के साथ सचेत भी करता है। अनेक गुणों से सम्पन्न यह पर्व हमारी जीवन शैली पर नजर रखकर हमें सीधा चलने की ओर इंगित करता है। क्षमा-सत्य-तप-त्याग-धर्म के मार्ग पर चलनेवाला न तो स्वयं भटकता है और नहीं औरों को भटकने देता है। हम सब यह बात अच्छी तरह से जानते है कि- धर्म से संबंधित कर्म सर्वत्र सौहार्द एवं सुख का संसार विस्तृत करता है। जैसे पुष्प की सुगंध पराग अगरबत्ती की सुगंध वायु से टकराकर सर्वत्र फैल जाती है उसी प्रकार धर्म के समभाव एवं अभाव में उठनेवाले सद्- असद् वायुमंडल के परमाणुओं को कम्पित कर वातावरण का निर्माण करते हैं।*

हमारी संस्कृति के मूल्यादर्शों को महापर्व पर्युषण से जोड़कर महाऋषियों ने धर्म के साथ सामाजिक सरोकारों को सम्मिलित कर मानव को धर्माधारित जीवन जीने का मार्ग दिखलाया है। भौतिक सुख सुविधा प्राप्ति की अंधी दौड़में हम अपने पारिवारिक सामाजिक कर्त्तव्यों को भूल गये है। पथराती संवेदनाओं, हिचकोले खाती मर्यादाओं, सन्निपाती श्रद्धा एवं दम तोड़ते संस्कारों जैसी अनगिनत सांस्कृतिक मूल्यहीनता के पक्षधारों तथा स्वार्थ के मृग मरिचिकाओं के भटकाउ में जैसे चारों ओर तिमिराच्छन्न का वातावरण निर्मित कर दिया है। हमारे पास महाश्रमण श्री महावीर स्वामी के द्वारा प्रदत्त अहिंसा और क्षमा की कालजयी संस्कृति होने के बाद भी उसे दर किनार कर सिर्फ हमारे मतलबी और स्वार्थी बन जीवन जीने का रहस्य समझ में नहीं आता है ? मोहमाया और छलकपट मय जीवन, जीवन से बाहर आने का ईशारा महापर्व करते है और हमारे जीवन में क्षमा, अपरिग्रह, सत्य, अहिंसा, सदाचार, करुणा, परोपकार की सतरंगी आभा बिखेरने का काम करते हैं।

जिंदगी का गणित बड़ा विचित्र है वह उल्टा चलता है, दुनिया के पीछे भागने पर दुनिया हमसे उल्टी चलती है, दुनिया से नजर फेर लोगे तो दुनिया हम पर नजर कर लेगी। दूसरों की नजर में उठने के लिये नजरों को झुकाना सिखना पड़ता है। कभी किसी नदी के किनारे लगे वृक्षों को देखेंगे तो पता चलता है कि -जो वृक्ष अकड़कर खड़े होते है तो उन्हें लहरों का पानी उखाड़ देता है। जबकी बेल लताये जो झुकना जानती है वे अपनी मस्ती में लहराती रहती है। जो अकड़ता है वह जल्दी उखड़ जाता है। फलदार वृक्ष ही झुका रहता है जिसमें दूसरे का सम्मान करने का भाव होता है वह झुककर जीत जाता है, क्षमा इसी बात को चरितार्थ करती है। परिवार समाज- लोगों को बदलने से कुछ नहीं होगा, अपने आपको बदलना होगा। इतनी बड़ी दुनिया में हम किस-किस को बदलेंगे? अपने हृदय को, अपने मन को बदलो, यही श्रीमहावीर की क्षमा है। ऊंचे स्थान पर पदों पर बैठकर आदमी महान नहीं हो जाता है बल्कि अच्छे आदमी जहां बैठ जाते है वह स्थान ऊंचा हो जाता है, गिरिराज-सिद्धाचल जैसे तीर्थ भी इसी कारण महान है। क्योंकि महान तीर्थकरों ने इन्हें महान बना दिया है। आदमी का चरित्र-व्यवहार आदमी को महान बनाता है। हम अपने को महान बनाने के स्थान पर महान स्थान पाने की कोशिश करते हैं। अपना नजरिया सोच बदलने की जरुरत है। नफरत और मतलब की दुनिया से बाहर आकर देखेंगे तो चारों ओर श्री महावीर ही दिखाई देंगे। महापर्व के आदर्श ही दिखाई देंगे। अपने रिश्तों को संवारने की कोशिश कीजिये। जहां आवश्यकता नहीं है वहां मत बोलिये, मौन धारण कर लीजिये, आधी समस्या तो ऐसे ही समाप्त हो जायेगी। प्रेम दोगे तो प्रेम वापस मिलेगा। ***संबोधन अच्छे हो तो संबध भी अच्छे होंगे।*** *परिस्थितियों को अपने अनुरुप ढालने का प्रयास करें। बाहरी दिखावे में तो जिंदगी नरक बन जायेगी। मैचिंग का जमाना है,* ***कपड़ों की नहीं मन की मैचिंग कर लेंगे तो इससे बड़ी कोई मैचिंग नहीं करनी होगी।*** *फिर दूसरी मैचिंग की जरुरत नहीं पड़ेगी। छोटी-छोटी बातें जीवन को बहुत ही प्रभावित करती है, पहले जिंदगी के नरक को सुधारे तो फिर मरने के बाद स्वर्ग की कामना सफल होगी क्योंकि हम बदलेंगे तो दुनिया बदलेगी। यह है पर्व का मूलाधार है यही है, प्रभुवीर की अहिंसा और क्षमा। अपने आपको देखने के लिये चर्म चक्षु नहीं धर्म चक्षु चाहिये। प्रज्ञा नेत्र अगर खुल गये तो चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देगा। हमारी चर्म आंखें बाहर को देखती है। अंदर बैठी आत्मा के दर्शन नहीं कर पाती है। प्रभुवीर की दृष्टि-धर्म की आंखें अंदर के दर्शन करवाती है, आत्मा के दर्शन करवाती है। किसी को पत्थर मारने से वह सुकुन नहीं मिलता है, जो किसी को मल्हम लगाने से मिलता है।* ***अच्छाईयों का मल्हम सारी उम्र हमारे साथ रहता है।*** *अच्छाई का मार्ग शुरु में बड़ा नीरस लगता है पर इसका रिजल्ट बहुत अच्छा आता है, बुराई का रास्ता शुरु से अच्छा लगता है पर इसका रिजल्ट बाद में बहुत खराब आता है। यदि कोई बुराई करता है तो तब हम यही सोचे कि यह मेरी अच्छाई की वजह से कर रहा है। विरोधियों से घबराना नहीं है, लोग फलदार वृक्ष पर ही पत्थर मारते है। स्वार्थमय चेतना अनेक बुराईयों की जड़है।* ***व्यक्ति समाज परिवार से जुड़ा हुआ। इसलिये व्यक्तिगत कोई बात नहीं होती है,*** *स्वार्थ, मतलब और नफरत से वह नहीं पाया जा सकता है जो व्यक्ति क्षमापूर्ण जीवन में पा सकता है। अक्सर स्वार्थ में हमें अपने ही हित दिखाई देते हैं। ऐसा होने से व्यक्ति में सहानुभूति, संवेदनशीलता और आत्मीयता के अंश कम हो जाते हैं तो फिर क्षमा का भाव कहां से पैदा होगा ? श्री महावीर के त्याग, श्री राम का मर्यादापूर्ण जीवन और कृष्ण का पुरुषार्थ हमें उजाले प्रदान करता है, यह चरित्र हमें जीवन के भटकाव से रोकते हैं। वर्तमान समय संबंधों में सौहार्द बढ़ाने का है। अपनी गलती के लिये ग्लानि प्रकट कर जीवन को नई राह पर आगे बढ़ाया जा सकता है।*

आईये ! हम अपने निज स्वभाव की और लौटने का प्रयत्न करें। हिंसा को तो कई बार अजमाया होगा, एक बार क्षमा को भी प्रयोग में लाकर देखें, अगर हम ऐसा कर पाये तो समृद्धि और स्वार्थ में अंधी बनी हमारी आत्मा को एक नये सुख-शांति का अनुभव करा पायेंगे। आगमोद्धारक परिवार हमेशा की तरह आपसे क्षमावत् है।

✽ डॉ. सुभाष जैन

करुणा भावना : सबके सुख-दुःख का बोध....

✻ आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

गुणीजनों को देखकर प्रसन्न होना और उनके गुणों की प्रशंसा करना प्रमोद भावना है। योग शास्त्र में इसे मुदिता दृष्टि कहा गया है तथा दूसरों को दुःखी, संतप्त या पीड़ाग्रस्त देखकर उनका दुःख/संताप दूर करने की पवित्र भावना जगना करुणा है। कहते है करुणा मनुष्य के हृदय में ईश्वर का साक्षात प्रकाश है। योगशास्त्र के रचनाकार श्री हेमचन्द्र सूरि ने लिखा है-

दीनेष्वार्त्तेषु भीतेषु याचमानेषु जीवितम्।
प्रतीकारपरा बुद्धिः कारुण्यमिति धीयते।

- योग शास्त्र 4/128

किसी दीन, दुःखी, अभाव पीड़ित, विपत्तिग्रस्त व्यक्ति को देखकर जिसका मन करुणा द्रवित होकर उनका दुःख दूर करने के लिये तत्पर होता है। वह अपने साधनों से, अपनी शक्ति से, और अपने प्रभाव से उन दुःखीजनों के दुःख दूर करने के लिये स्वयं प्रयत्न करता है। जैसे भूखों को भोजन देना, प्यासों को पानी पिलाना, रोगियों की सेवा के लिये अस्पताल आदि खुलवाना या दवा, चिकित्सा के साधन सुलभ करना, अपने शरीर से, धन से किसी प्रकार की सहायता करना आदि। अशिक्षितों को ज्ञान दान करना, उनको अशिक्षा/अज्ञान दूर करने के लिये विद्यालय खोलना पुस्तकों आदि की सहायता करना, अकाल व भूकम्प पीड़ित आश्रय विहीन, साधनहीनजनों के मन में जो आर्त्त-रौद्र ध्यान उत्पन्न होता है, उनकी सेवा, सहायता करके उनका दुःख/विपत्ति आदि यथाशक्ति दूर करना। कत्लखाने में जाते मूक पशुओं की रक्षा करना, उन्हें जीवनदान देना। भूखे-प्यासे पशु-पक्षियों को चारा, पानी दाना आदि डलवाना , पक्षियों को बन्धान मुक्त करना। अकाल पीड़ित मनुष्यों व पशुओं की रक्षा करना इत्यादि सभी कार्य करुणा के लक्षण है और करुणाशील पुरुषों का कर्त्तव्य भी है।

जैन धर्म में करुणा भावना का क्षेत्र और स्वरुप बड़ा ही व्यापक है। भगवान श्रीमहावीर परम कारुणिक थे। उन्होंने यज्ञों में होनेवाली मूक पशुओं की हत्या के विरुद्ध में यज्ञों में लाखों जीवों की बलि होते देखकर उसे रोकने के लिए जनता को उपदेश दिया। स्वयं गांव-गांव में जाकर उस हिंसा के दुष्परिणाम समझाकर मनुष्यों के भीतर सुप्त करुणा भाव को जगाया और जीव दया के क्षेत्र में एक महान क्रांति की। उनका संदेश है-

सच्चे जीवा कि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोरं निग्गंथा वज्ञयंति णं॥

जगत के छोटे-बड़े सभी जीव जीना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। सव्वेसिं जीवियं पियं-सबको ही जीना प्रिय है। सच्चे सुह साया दुक्ख पडिकूला-सभी को सुख प्रिय है, दुःख अप्रिय है। सभी सुख चाहते है। इसलिये दूसरे को दुःख देना, दूसरों के प्राण लूटना महापाप है। दूसरों का जीवन लूटने वाला घोर नरक में जाकर असह्य दारुण यातनाएं भोगता है।

परम करुणावतार भगवान श्रीअरिष्टनेमि ने अपने विवाह के निमित्त प्रतिभोज के लिए बाड़े में बंधे मूक पशुओं का क्रन्दन सुना तो उनकी अन्तर आत्मा में तुरन्त उनको मुक्त करने की तड़प उठी। जीवों की करुणा से प्रेरित हुए समस्त पशुओं को तुरन्त बंधन मुक्त करवा दिया।

राजकुमार पार्श्वनाथ ने कमठ तापस की धुनी में जलते नाग को देखकर करुणा द्रवित हो उठे, उसे बाहर निकलवाकर नमोकार मंत्र सुनवाया और उसकी आत्मा का कल्याण किया।

जैन इतिहास में दानवीर जगडूशाह का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। 5 वर्ष के भयंकर दुष्काल के समय उन्होंने 112 दानशालाएं खुलवायी, जहां हजारों-लाखों मनुष्यों को प्रतिदिन भोजन मिलता था।

करुणा के सैकड़ों हजारों रुप है। करुणा भावना में हृदय की संवेदनशीलता और कोमलता ही मुख्य है। अतः प्रतिक्षण मन को, वचन एवं कर्म को समस्त जीवों की सेवा, रक्षा और उपकार के लिये समर्पित करते रहने के भावों में रमण करना करुणा भावना है।

भरत क्षेत्र- पाँच तीर्थंकर

1-	अजितनाथ-	जंबुद्वीप
2-	सिद्धान्तनाथ-	धातकीखण्ड-पूर्वार्ध
3-	करणनाथ-	धातकी खण्ड-पश्चिमार्ध
4-	प्रभासनाथ-	पुष्करार्ध-पूर्वार्ध
5-	प्रभावकनाथ-	पुष्करार्ध द्वीप-पश्चिमार्ध

क्षमादिन बने राष्ट्रीय त्यौहार : क्षमा वीरस्य भूषणम्

✻ सुनील काला, औरंगाबाद

बहुविधता यह भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। अलग-अलग भाषा, धर्म, पंथ, रीति-रिवाज, विचारधारा ये सारी अपनी भारतीय संस्कृति की उदात्त का ही चरण कमलों पर बहुत ही सुख चैन से एक साथ निवास करती है। हजारों वर्ष की इस भारतीय संस्कृति का अलग पण है वो उसके सर्व समावेशकता में। दुनिया में जो भी कुछ अच्छा है वो अपने में बहुत ही सहजता से समां लेने की अद्भूत क्षमता इस संस्कृति में कूट-कूट कर भरी हुई है। इसलिये दुनिया में किसी भी देश में नहीं इतनी विविधता हमारे देश में दिखाई देती है। यहां के हर व्यक्ति में वो इस तरह समायी हुई है कि अपनी अलग पहचान बताते हुए भी हर किसी के बीज इसी भारतीय संस्कृति में ही पनपे है यह सिद्ध हो जाता है। यहां के मूलनिवासी कौन और बाहर के कौन यह पहचान पाना भी अब संभव सा है। इसलिये बाहर के किसी भी देश का परिणाम यहां लागू नहीं होते। इतनी विविधता के बावजूद आप सब एक कैसे इस प्रश्न का उत्तर भी एक ही है और वो है इस देश की संस्कृति और सभ्यता।

आधुनिक भारत का निर्माण करते समय भी हमने कई नई परम्पराएं अपनाई। विज्ञान-तंत्रज्ञान के साथ में नए उत्स, नई वेशभूषा, उत्सव ये सारा हमने बहुत ही उत्साह से अपनाया। इस नए परण को भी हमने अपने भारतीय संस्कृति की चौखट में कुछ इस तरह ढाल दिया कि ये अपनी अलग पहचान ही भूल गए। भारत की यही विशेषता पूरे संसार को अपनी और आकर्षित करती है। नया, अच्छा कुछ भी स्वीकारने में कभी भी पीछे ना रहनेवाले भारत ने भी दुनिया को कई नई परम्पराएं, विचारधारा से अवगत कराया और पूरी दुनिया में वो बखूबी निभायी जा रही है।

हमारे देश के कुछ मानचिन्ह है, जैसे मोर राष्ट्रीय पक्षी सिंह राष्ट्रीय पक्षी, अशोक चक्र, तिरंगा आदि। ''स्वतंत्रता दिवस'' और ''प्रजा सत्ता के दिन'' ये हमारे देश के राष्ट्रीय त्यौहार। इसी तरह दिवाली, ईद, क्रिसमस आदि कई त्यौहार अलग-अलग धर्मो की मान्यताओं पर उसी परम्परा के अनुसार मनाए जाते है। लेकिन इसमें एक कमी अक्सर अखरती है कि अपने देश में अपनी परम्परा, विचारधारा, सोचों के अनुसार सभी के लिए एक भी त्यौहार नहीं है। हमारी संस्कृति की उदात्तता, महानता को प्रकट करने वाला सभी मना सके ऐसा कोई त्यौहार होना बहुत ही जरुरी है। परम्परा से चलते आ रहे किसी भी त्यौहार में कोई परिवर्तन बदलाव किये बगैर हमारी उच्चतम परम्पराओं को, विचारों को, तत्वज्ञान को अपने में समा सके ऐसा एक सर्वसमावेशक त्यौहार अपनाने की आज जरुरत है। दुनिया के सामने कई आदर्श प्रस्तुत करने वाले भारत ने इस त्यौहार की माध्यम से एक सर्वसमावेशक, सब विचारधाराओं को साथ लेकर चलने वाला, उच्च आदर्श प्रस्तुत करने वाला त्यौहार स्थापित करना अत्यावशक हो गया है।

भारत में कई धर्म, पंथ एक साथ बड़े ही भाईचारे से गुजर-बसर करते है क्योंकि इस देश की संस्कृति ने उन्हें अपने-अपने तरीके से चलने की अनुमति दे दी है। सब धर्मो का मूल एक ही है, सब धर्म मानव उत्थान का ही मार्ग सिखाते है। सब धर्मो का मूलभूत तत्वज्ञान हमने बगैर किसी शर्त और सहर्ष स्वीकार किया इसीलिए ये संस्कृति इतनी महान बन पायी। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन और उन्नत करने के लिए और संवेदनक्षम बनाने के लिए और उदार बनाने के लिये हमने मानवता के कई विचारों को अपनाया। ''**क्षमा**'' यह तत्व हमने इसी तरह स्वीकृत किया है। वो हमारे वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का एक अविभाज्य अंग है। दुनिया के हर धर्म ने ''**क्षमा**'' को अपने तत्वज्ञान में बहुत ही उच्च स्थान दिया है। ''**क्षमा मांगना**'' और ''**क्षमा करना**'' ये दोनों भी बातें हर धर्म में, तत्वज्ञान में अलग-अलग तरह से सम्मिलित है।

इसी तरह जैन धर्म में भी क्षमापना पर्व को असाधारण महत्व है। इस पर्व का पालन जैनधर्मीय बड़ेही श्रद्धा से करते है। हर धर्म में बड़ा महत्व रखने वाले इस क्षमापना पर्व को हर व्यक्ति तक उसकी पूरी गरिमा के साथ पहुंचना आज की असहिष्णुतापूर्ण वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है।

हिन्दू, मुस्लिम, ख्रिश्चन, बौद्ध, जैन, पारसी, सिख कोई भी धर्म लीजिए उसमें क्षमा को बहुत बड़ा स्थान दिया गया है। सब धर्म ग्रंथों में, त्यौहारों में यह बात बड़ी स्पष्टता से प्रतीत होती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार कार्य की समाप्ति एक निशाद के बाण से हुआ। अपना देह त्यागते समय भगवान ने उसको स्वर्ग प्राप्ति का वरदान दिया। अपने को क्रूस पर चढ़ाकर कील मारने वालों को भगवान क्षमा करें, यही प्रार्थना प्रभु येशू की दिल से निकली थी। कुरआन में कहा है कि -जो

क्रोध को काबू में रखकर दूसरों को क्षमा करता है, अल्ला उसी नेक बंदे से प्यार करता है। गुरु ग्रंथ साहिब में क्षमा करना ये वीरता का लक्षण माना गया है। भगवान बुद्ध का सारा जीवन की प्रेम, करुणा और अहिंसा पर आधारित था। ऐसे इस क्षमाभाव को अपने जीवन में लाने के लिये उसके सातत्यपूर्ण आचरण के लिये, इसे अपने संस्कारों में पूरी तरह से उतारने के लिये आज प्रेरक की आवश्यकता है। यह प्रेरणा का काम कर सकता है, एक नया राष्ट्रीय त्यौहार। किसी भी जाति या धर्म का नहीं फिर भी सबको यही होता है राष्ट्रीय त्यौहार। इस त्यौहार की एक विशेषता यह भी होगी कि वह धार्मिक, सामाजिक या राष्ट्रीय किसी भी तरह उतनी ही सार्थकता के साथ मनाया जा सकता है। इसे मनाने की कोई नई संकल्पना भी निश्चित की जा सकती है। यह त्यौहार व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रुप से भी मनाना संभव है।

15 अगस्त और 26 जनवरी ये अपने देश के दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्यौहार। लेकिन यह दोनों भी त्यौहार एक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। देश की आजादी और प्रजातंत्र को स्वीकार इन घटनाओं के स्मरण में हम इन्हें मनाते है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्षो में बनी है, विकसित हुई है। इसके विकसिन में कई कठिनाईयां, कई मोड़, कई रुकावटें, कई आक्रमण आए। उन सब का सामना करते-करते ही यह संस्कृति और परिपूर्ण, समृद्ध बनती गई। इस संस्कृति की विकसन के समुद्र मंथन से निकला हुआ एक अनमोल रत्न है ''क्षमा।'' क्षमा का तत्वज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के दिल में, दिमाग में और आचरण में भी पूरी तरह से उतरना अत्यावश्यक है। इसके आचरण से ही समाज में बंधुभाव, प्यार बढ़ेगा, सुख-शांति और समृद्धि अपना द्वार खटखटाएगी।

हजारों वर्षो से सभी महापुरुष यही बात हमें बताते आए लेकिन आज का माहौल देखकर लगता है कि हम उन्हें समझने में कुछ गलती कर रहे है। अच्छी बातें समाज के सामने प्रखरता से लाने के लिए उतनी ही ताकत से कोशिश जरुरी है। हमारी उत्सवप्रियता को ध्यान में रखकर उसी माध्यम का उपयोग करते हुए एक नया त्यौहार आज समाज को देना जरुरी है और उसे हम मना सकते हैं ''क्षमादिन'' ये राष्ट्रीय त्यौहार के रुप में। इस त्यौहार को किस तरह मनाया जाए इस पर कई सूचना आ सकती है, लेकिन यह त्यौहार होगा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र को भी लांघकर पूरे विश्व को अपने आगोश में लेने वाला। दुनिया को कई अनमोल तोहफें देने वाले भारत ने ''क्षमापना दिन'' को राष्ट्रीय त्यौहार के रुप से स्वीकार कर दुनिया को क्षमापना की ओर जाने का एक नया रास्ता दिखाना ही चाहिये।

भारतीय संस्कृति दुनिया की एक प्राचीनतम संस्कृति। इसकी कई अच्छी बातें दुनिया भर में बड़ी ही प्यार से आचरण में लायी जाती है। जो तत्वज्ञान सर्वमान्य है, सब स्वीकृति है उस ''क्षमा'' के तत्वज्ञान को अपनाया, आज के हिंसा पूर्ण द्वेषमूलक वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की आज फैशन सी बन गई है। ऐसे समय में फिर एक बार पूर्व की ओर से, भारतीय संस्कृति की ओर से दुनिया को ''क्षमा'' का तत्वज्ञान देना हमारा कर्त्तव्य है। ''क्षमापना'' को राष्ट्रीय त्यौहार के रुप में मनाकर हम दुनिया के सामने एक नया आदर्श त्यौहार रख सकते है, जो सभी के जीवन में आनंद की, सुख की, समृद्धि की बरसात कर सके, सुखमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दे सके।

पर्युषण से पहले....

पर्युषण से पहले....
जरा सा मुस्करा देना
पर्युषण से पहले !
हर गम को भुला देना....
पर्युषण से पहले....
ना सोचो किसने दिल दुखाया
सबको माफ कर देना....
पर्युषण से पहले....
क्या पता.... फिर मौका मिले न
मिले इसलिए दिल को साफ कर लेना।
पर्युषण से पहले....
कुछ इस तरह मैंने जिंदगी को आसान
कर लिया
किसी से माफी मांग ली किसी को
माफ कर दिया
पर्युषण से पहले

मैं नागश्री

✽ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

रसोई बनाने में मैं होशियार थी। मेरी रसोई जिसके मुंह में जाती वह मेरी भरपूर प्रशंसा किये बिना नहीं रहता। मेरे पति तो मुझे रोज कहते- प्रिये ! तू इतनी सुंदर रसोई बनाती है कि अंगुलियां चबा जाने का मन हो जाता ! ऐसी प्रशंसा से मैं फूलकर कुप्पा हो जाती। स्वप्रशंसा किसे पसंद नहीं होती ?

मेरा गांव चम्पापुरी। पति का नाम सोमदेव ! कुल हमारा ब्राह्मण का। एक बार हमारे घर भोजन-समारंभ था ! हमारा पूरा परिवार हमारे घर भोजन के लिये आनेवाला था ! मुझे बहुत होश थी, खिलाने की, खास करके मेरी पाकशास्त्र की कला दिखाने की। रसोई में भी सब्जी बनाने में मेरी मास्टरी ! मेरा जो खाता शाक ! उतर जाता उसका सब थाक ! ऐसा मैं मानती।

इस भोजन-समारंभ में तो ऐसी सब्जी बनाऊं, ऐसी सब्जी बनाऊं कि सभी चकित हो जाये...! और मैंने तुंबड़ी (दूधी) का शाक बनाया। नमक, मिर्च, तेल इत्यादि डालकर ऐसा स्वादिष्ट बनाया कि मत पूछो बात ! किन्तु रे, जैसे ही मैंने इसे चखा.... थूं.... थूं.... करके फेंक दिया। कड़्वा जहर था। मुझे पता चल गया- मैंने मसाले के ऊपर तो ध्यान दिया, परन्तु मूल वस्तु पर ही ध्यान नहीं दिया। शून्य बढ़ाती गई, लेकिन आगे के एकड़े पर तो ध्यान ही नहीं दिया ! मकान बनाती गई, लेकिन नींव पर तो ध्यान ही नहीं दिया ! रे, मेरी मूर्खता !

मेरे मनोरथों का मिनार क.... ड.... ड.... भूस गिर पड़ा। यह कड़्वी तुंबड़ी की सब्जी इतनी कड़्वी थी कि किसी को खिला नहीं सकते ! कड़्वी ही नहीं, विषैली भी थी। सब्जी विषैली होने पर भी उसे फेंक देने का मेरा मन नहीं हुआ। सब्जी बनाने के लिये मैंने कितनी मेहनत की थी ? कितना किमती मसाला डाला ? ऐसी सब्जी को फेंकी कैसे जा सकती ? मैंने शाक को एक तरफ रख दिया।

जिस सब्जी पर बहुत अरमान रखे थे वह ही ऐसी निकली। सचमुच ही जिस चीज के ऊप्रर हमें बहुत अभिमान होता है, अधिकतर यह चीज हमारे हाथ से चली जाती है। रुप का अभिमान किया तो रुप गया समझो। कुरुप बनना पड़ता है। बुद्धि का अभिमान किया तो बुद्धि गई समझो। धन का अभिमान किया तो धन गया समझो। अपनी किसी भी विशेषता का अभिमान करके उस विशेषता को खो देनेवाले बहुत से लोग आपको आपके आसपास मिल जाएंगे। कुदरत इसके द्वारा मनुष्य को संकेत देना चाहता है- ओ मानव ! तुझे मिली हुई किसी भी असाधारण विशेषता का अभिमान मत करना। नहीं तो वह विशेषता चली जायेगी। लेकिन यह संकेत निर्मल बुद्धिवाले ही समझ सकते हैं। मेरे जैसी कठोर, हृदय-हीन बुद्धिशाली औरत क्या समझ पायेगी ? संकेत स्पष्ट था- ''पाकशास्त्र की निष्णातता का अभिमान छोड़ दे.... नहीं तो परिणाम अच्छा नहीं आयेगा।'' किन्तु कुदरत का यह संकेत मेरे बहरे कान कहां से सुनेंगे ? संवेदनहीन व्यक्ति, स्थूल संकेतों को भी पकड़ नहीं सकता तो सूक्ष्म संकेतों की तो बात ही क्या करनी ?

शाक एक तरफ रखकर मैं दूसरा काम करने लगी थी वहीं ''धर्मलाभ'' शब्द मेरे कानों में पड़ा। यह मुंडिया कहां सुबह-सुबह चले आये ? कुछ काम-धंधा ही नहीं है। मुफ्त का खाना ! कोई काम-धंधा तो करना है नहीं। ''धर्मलाभ'' देकर पात्रे भरकर रवाना हो जाना, यही धंधा ! जैन साधु को हर रोज देखकर मैं मन ही मन बड़बड़ाने लगती थी। मुझे साधुओं के ऊपर पहले से ही भयंकर द्वेष ! साधुओं को तो ''साधुड़ा'' ही कहती ! मेरे मन तो यह मुफ्त का खाकर ऐशो आराम करनेवाली बाबाओं की जमात ही थी ! ऐसे बाबाओं को तो सीधेकर डालने चाहिये। ऐसा मैंने कई बार सोचा होगा.... लेकिन जैसा मैं चाहती थी वैसा मौका मिला नहीं था। आज अनायास ही अच्छा मौका मिला था। जैन साधु भिक्षा के लिये आये थे और मेरे पास विषैला शाक तैयार था। ऐसे अवसर मिले कहां से ? मैंने मौका झड़प लिया। घर में आये हुए साधु के पात्र में कड़्वी तुंबड़ी का जहरी शाक वहोरा दिया। ''वहोरा दिया'' ऐसा कहुं इससे तो ''डाल दिया'' ऐसा कहुं तो अधिक उचित रहेगा।

मेरे जैसी पागल ने माना- चलो, अच्छा हुआ एक पंथ दो काज। मुनि को दान दिया ऐसा भी कहलायेगा और शाक का भी ठिकाना पड़गया.... लेकिन इस ''ठिकाने'' में से ''ठि'' निकलकर मेरे भाग्य में ''काना (छेद)'' ही पड़नेवाला है इसका मुझे कहां पता था ?

मुनिश्री धर्मरुचि तो शाक ग्रहण करके सरलभाव से अपने गुरुदेव आचार्य श्री धर्मघोषसूरीजी के पास चले गये।

3-4 प्रहर के बाद समाचार मिले- धर्मरुचि मुनि ने आहार जब अपने गुरुदेव को बताया तब गुरुदेव ने उस आहार को निर्जीव स्थंडिल भूमि (खाली जगह) पर त्याग कर देने को

कहा। क्योंकि गुरुदेव जान चुके थे कि यह शाक जहरीला है। गुरु की आज्ञा मस्तक पर धारण करके मुनि धर्मरुचि जंगल में गये.... परन्तु जहरीले शाक के बिन्दुओं से चींटीयों को मरती देखकर उनका दयार्द्र हृदय कांप उठा। इससे शाक को कहीं बाहर नहीं डाल कर पेट में ही डाल दिया। कातिल जहर शरीर में फैल जाने से मुनिश्री की समाधिपूर्ण मृत्यु हुई। उनकी मृत्यु से शिष्य परिवार सहित आचार्यश्री सिहर उठे। आचार्यश्री की प्रेरणा से साधुओं ने चौराहे पर खड़े होकर मुनिश्री के अकाल अवसान की घोषणा की और गुनहगार को योग्य सजा मिलनी ही चाहिये ऐसा सभी को अनुरोध किया। एक महात्मा की ऐसी हत्या बरदास्त नहीं हो सकती। पूरे नगर में हलचल मच गई। सभी की शंका की नजर आखिर मुझ पर पड़ी। नगर में पवनवेग से बात फैल गई- निर्दय नागश्रीने द्वेष-बुद्धि से जैन मुनि धर्मरुचि को कड़वी तुंबड़ी का जहरी शाक वहोराया था। निर्दोष महात्मा की हत्यारीन को हजारों धिक्कार हो! सभी मुझे एक आवाज से धिक्कारने लगे। दूसरे सभी तो ठीक लेकिन हमारी ज्ञाति के ब्राह्मण भी मेरे ऐसे निर्घृण क्रूर कृत्य की एक आवाज से निंदा करने लगे। अरे.... मेरे परिवारजनों ने भी मेरी भर्त्सना की.... इतना ही नहीं आगे बढ़कर मेरे पतिदेव ने भी मुझे घर से बाहर निकाल दिया- कालमुखी! ऐसे बुरे कार्य करती है? पूरे नगर में नाम खराब करती है? शर्म नहीं आती? जा.... निकल जा.... घर से बाहर। तेरा मुंह देखना भी पाप है। किसी और की नहीं, और तूने मुनि की हत्या की? निर्दोष मुनि की? क्या बिगाड़ा था मुनि ने तेरा? तुझे कुछ विचार भी नहीं आया? तेरा हृदय क्यों काप न उठा? तेरा हृदय, हृदय है या सिर्फ मांस का पिंड है? प्रेम जैसा कोई तंत्र तेरे अंदर है या नहीं? ऐसा निष्ठुर हृदय लेकर फिरती है तू? ऐसी कठोर स्त्री मुझे नहीं चाहिये, तू यहां से निकल जा। तुझे देखते भी मुझे क्या का क्या हो जाता है।

गांव से तिरस्कृत, ज्ञाति से धिक्कृत, परिवार से धकेली हुई, कुल से दुतकारी हुई, पति से व्यक्त मैं सभी के ताने-उलाहने सुनाती नगर में से बाहर निकली। सभी ने मेरी इतनी भर्त्सना की। परन्तु मुझे मेरे कृत्य का कोई पश्चाताप नहीं हुआ। उल्टे मैं सभी को गालियां देने लगी। सभी खराब है। मेरा चले तो साधुओं के साथ सभी साधु-भक्तों को भी सीधे कर डालूं। ऐसे भयंकर रौद्रध्यान से रौद्र अटवी में मरकर मैं स्त्री अधिक से अधिक जहां जा सकती है उस छठवीं नरक में जा पहुंची। मेरे काले कृत्यों का मिला हुआ यह बदला था।

पर्युषण पर्व

पर्युषण पर्व हमारी तमाम उष्णताओं को शीतलता प्रदान करनेववाला पर्व है। प्राणी मात्र को अंधकार से प्रकाश की ओर, पशुत्व से देवतव की ओर, पाप से पुण्य की ओर एवं अत्याचार से सहानुभूति की ओर ले जाने वाला राजमार्ग है। इस अकेले पर्व ही में मानव जीवन को उत्तम बनाने, समानता और विश्व बन्धुत्व स्थापित करने वाले कितने सुन्दर पक्ष विद्यमान है। क्षमा मृदुता, सरलता, शुचिता, सत्य, संयम, तप, त्याग, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये दस गुण जब माला बनकर किसी के जीवन को सुशोभित करते हैं तब वहां होती है भावों की निर्मलता, चिन्तन की पारदर्शिता और प्राणीमात्र के प्रति आत्मीय निकटता इनका उदय हमारे भीतर के क्षितिज से ही संभव है।

वर्तमान में जब विश्व हिंसा की सर्वग्रासिनी ज्वाला से धधक और झुलस रहा है नैतिकता और मानवता नानाभरण भूषित नर्तकी की भांति अनृत के मंच पर थिरक रही है। भौतिकवाद के स्वार्थी जबड़े और लिप्सा की जीभ्या एक एक करके मानव मूल्यों को चाट रही है। इस आपाधापी और अंधी दौड़ में ऊपर से सजा इन्सान भीतर ही भीतर खोखला हो रहा है, टूट रहा है। जीर्णारण्य बनते अन्तर्जगत के आत्म सुधार का एक ही मार्ग है। वैचारिक शुद्धि। चूंकि अच्छा या बुरा कुछ भी करने से पहले विचार का जन्म होता है और जब हमारे विचारों की मनोभूमि चारों कषायों और पांचों पापों से मुक्त होगी तभी हम मानव जन्म को सार्थक कर सकते है। शेक्सपियर ने कहा है- **''देयर इज नथिंग आइदर गुड और बैड बट थिंकिंग मेक्स इट सो''** चिन्तन के जो बीज हमारी चेतना में पड़ते है वही कालान्तर में अंकुरित पल्लिवित और पुष्पित होते हैं। हमारा प्रयास होना चाहिये कि हमारे विचार उग्रता और आतुरता के रथ पर सवान न होने पायें। आज ऐसे ही पर्व की घर-घर आवश्यकता है। पर्युषण पर्व चारों ओर फैली सब प्रकार की उष्णता को शांत करने में समर्थ है। इस पावन पर्व पर हम पुनः अपने अन्तःकरण की जुताई करें और इन दस निर्मल भावों के बीज डाल दें। इनकी सुहानी फसल विलम्ब नहीं तत्काल उगती है और चारों ओर सुख शांति समृद्धि का संदेश प्रसारित करती है। इस पावन पर्वराज की सभी को शुभकामनाएं, व्रत (संकल्प) से संयम (पुरुषार्थ) से हम अपनी यात्रा सुनिश्चित करें।

क्षमा को बना लो आदत

संपूर्ण देश में भक्तिभाव और उत्साह के साथ पर्युषण पर्व मनाया। यह आध्यात्मिक पर्व के साथ हमारी आत्मा और मन को शुद्ध करने का सुअवसर भी है। चारों ओर से आत्मा में रहनेवाले पाप-कर्मो को जलाए-तषाए वह पर्युषण पर्वहै।पर्युषण एक आध्यात्मिक महापर्व है जो वैचारिक प्रदूषण से मुक्ति दिलाता है। यह तिथि में नहीं मनः स्थिति में पैदा होता है। एक बार प्रकट हो जाए तो फिर कभी नहीं जाता नहीं है।

पर्युषण पर्व क्षमा से प्रारंभ होता है और क्षमा पर ही जाकर समाप्त होता है। पर्युषण पर्व तिथि में तो चले गए लेकिन इस पर्व की भावनाओं को अभी तक हमने अपने हृदय में नहीं उतारा, इस पर्व को मनाने की सार्थकता एवं समाज के लिए हितैषी दूरगामी उपयोगिता तभी है, जब हम आज से लेकर आनेवाले पर्युषण पर्व तक अपने मन व आत्मा को इतना शुद्ध एवं कषायरहित कर लें कि हमारे अंतःकरण में शत्रुता एवं राग द्वेष का कोई भाव ही नहीं बचे। यह सच्चाई है कि हममें से कई व्यक्ति मानवीय प्रवृत्तियों के आगे विवश है और कईयों का अपने स्वभाव और मन पर जोर नहीं रहता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदी या कथित शत्रु के प्रति बैर-भाव में कमी तो ला ही सकते हैं। हमें इस पर्युषण पर्व से आगामी वर्ष के पर्युषण पर्व की अवधि तक अपनी आत्मा एवं मनःमस्तिष्क की स्थिति का आत्ममंथन एवं आत्म विवेचना करनी होगी और यह देखना होगा कि हम अपने भीतर क्षमा के भाव को कितना प्रगाढ़ करते हुए शत्रुता व राग-द्वेष के भाव में किस स्तर तक कमी ला पाए। हमारे मन में कषाय भाव और राग भाव बढ़े अथवा कम हुए। क्या हम इस अवधि में अपने शत्रुओं की संख्या कम करने और मित्रों की संख्या में वृद्धि करने में सफल रहे। यदि हम इन सभी प्रश्नों का सकारात्मक उत्तर देकर क्षमा की कसौटी पर खुद को खरा साबित करते हैं, तभी हम दृढ़भाव से यह कहने की स्थिति में होंगे, कि हां, हमने इस बार क्षमावाणी पर्व पूरे मन और आत्मा से मनाया है, यदि हम ऐसा नहीं कर सके तो इस बार का क्षमावाणी का पर्व भी पूर्व के वर्षो की तरह महज औपचारिकता बनकर रह जाएगा।

क्षमा....

*** ''क्षमा'' से ही खुशहाल बनेगी यह धरती, यह समाज....**

*** न क्षमा मांगी जाती है और न दी जाती है, बल्कि क्षमा तो धारण की जाती है।**

मेरा मानना तो यही है कि क्षमा विशुद्ध तौर पर धारण करने का भाव है। न क्षमा मांगी जाती है और न दी जाती है, बल्कि क्षमा तो धारण की जाती है। जो क्षमा धारण करता है, वह क्षमा मांगने या क्षमा करने की औपचारिकता से दूर रहता है। क्षमा मांगने और क्षमा करने के लिये दो लोगों की आवश्यकता पड़ती है, एक क्षमा मांगने और एक क्षमा करने वाले की। लेकिन यदि हम क्षमा को अपने जीवन का स्वभाव बना लें, तो क्षमायाचक-क्षमाकर्ता का विकल्प ही समाप्त हो जायेगा। ज्यादा श्रेयस्कर यह होगा कि हम दूसरे के प्रति राग-द्वेष के भाव का शमन करते हुए अंर्तआत्मा से किन्हीं गलतियों के लिये उसे क्षमा कर दें, और अपने मन में पूरी संवेदना से उन त्रुटियों के लिए भी क्षमायाचना करें, जो उसके प्रति हमसे हुई है, इस तरह हम क्षमा को अपने मन व हृदय में धारण कर सकेंगे। हमारे मन की यह धारणा किसी से कह कर बताने की जरुरत नहीं है, बल्कि हमारे कार्य-व्यवहार और व्यक्तित्व से ही यह अभिव्यक्त होगा, कि हमने स्थायी रुप से क्षमा को अपने मन में बसा लिया है, एक बात और, क्षमा धारण करने में जरुरी नहीं कि हमारा किसी से द्वेष या बैर हो, क्षमा तो प्राणी मात्र के प्रति धारण की जा सकती है। अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि हम क्षमा तभी धारण करें, जब हमारा किसी से राग-द्वेष अथवा दुश्मनी का भाव हो, अर्थात् शत्रुता के भाव से निर्लिप्त रहने पर भी क्षमा को धारण किया जा सकता है।

दर असल, क्षमा मांगने और देने की विषयवस्तु नहीं है, यदि हम क्षमा मांगने आएं, कषाय-द्वेष के भावों से चर्चा करें और क्षमा को अपनी आदत बना लें तो बच्चों का खेल-खिलौना हो जाएगा क्षमा। मुझे यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं लगती कि आज क्षमावाणी एक औपचारिकता बनकर रह गई है। मुझे बड़ा आश्चर्य और क्षोभ होता है, जब मैं देखाता हूं कि हम क्षमा भी मित्रों से मांगते है,

दुश्मनों से नहीं, क्षमा में मां छिपी है, जिस प्रकार एक मां अत्यंत क्षमाशील होती है, उसी प्रकार धर्म के प्रमुख दस लक्षणों में उत्तम क्षमा की शक्तिअनंत और अतुल्य है। उत्तम क्षमा साधुता की परिचायक है। धर्म के इस महालक्षण का साधु दृढ़ता से पालन करते हैं। श्रावक और साधक को जीवन में क्रोध पर विजय पाने के लिये क्षमा का गुण अपनाना ही चाहिये। मैंने इसी लेख में पहले की पंक्तियों में कहा था, कि धर्म क्षमा है और चर्चा क्रोध की हो, तो सुनने में अचरज भरा लग सकता है, लेकिन मैं यहां यह भी कहना चाहूंगा कि क्षमा के गुण के ज्ञान हेतु चर्चा क्रोध की होना पूर्णतः होना मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि सारी दुनिया जितनी क्रोध से परिचित है, उतनी क्षमा से नहीं। यह नियम है कि हमेशा परिचित से अपरिचित का ज्ञान होता है। इसलिए अपरिचित क्षमा को समझने के लिए चिरपरिचित अनुभव क्रोध को समझना आवश्यक है। जब हम क्रोध का शमन और दमन करना सीख लेंगे और इसमें पूर्णतः पारंगत हो जाएंगे, तो क्षमा हमारे कार्य व्यवहार में स्वमेव ही आ जाएगी।

पर्व में क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, आकिंचन, ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी गई है। प्रत्येक दस लक्षण का अपना ही विशिष्टमहत्व है। लेकिन इनमें क्षमा का कुछ अधिक ही महत्व है। आज हमारा समाज जिन चुनौतियों से रुबरु है, और देश-दुनिया में जैसे हालात बने है। विभिन्न राष्ट्रों के साथ समाजों और संप्रदायों में कटुता का भाव देखने को बदल रहा है। एक दूसरे को नीचा दिखाकर प्रतिद्वंदी को कमजोर करने की समाज में प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन परिस्थितियों में समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा क्षमा को अपने मन और व्यवहार में अंगीकार करने की आवश्यकता और प्रबल हो गई है। जब हम पूरे संकल्प भाव से क्षमा को अपना पाएंगे तभी समाज का सद्भाव और सौहार्द के साथ इस धरा की खुशहाली को बचा पाएंगे। यह मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूं कि जिस व्यक्ति के हृदय में क्षमा का भाव नहीं होता है, वह स्वभाव से कठोर और कटु होता है। ऐसा व्यक्ति समाज के लिए कभी सुखदायी नहीं हो सकता। इसलिए हमें प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को क्षमाशील बनाना होगा। समाज को क्षमा के पथ पर मोड़ना होगा। हमारी आध्यात्मिक संस्कृति में क्षमा कोई नया अथवा अनूठा शब्द नहीं है। बल्कि युगों-युगों से इसका महत्व और प्रासंगिकता बनी हुई है। हमारे महान तीर्थकर क्षमा पर ही जोर देते रहे हैं। यदि आप मेरी इन पंक्तियों में से किसी एक सीख को भी अपने जीवन व कार्य-व्यवहार में ढाल सकें, तो मैं अपनी लेखनी को सार्थक एवं जीवन को धन्य समझूंगा। क्षमावाणी के महान पर्व पर अंतःकरण की शुद्धिपूर्वक।

मैं प्राणी मात्र के प्रति क्षमा धारण करता हूं....

ओम नमः सबसे क्षमा....
सबको क्षमा.... क्षमा....

जो मेरा नहीं ....

✻ दिपेश शाह, बांसवाड़ा

जो मेरा नहीं उसे मैं अपना समझने लगा।
दुनिया की भीड़में अपनों को खोजने लगा.... 1
पानी में दिखते चाँद को पकड़ने च ला।
जब होश में आया तो ख्वाब टूटता नजर आया 2
मुद्दत से ख्वाब में अपनों को देखा तो चेहरे पे मुस्कान चली आई।
जब खुली आँख तो ख्वाब को टूटता देखा 3
हे प्रभु अरज करता हू तेरे दरबार में मुझे अपनों से मिला दें।
नहीं तो तू मुझे अपने पास बुला ले 4
रहती है तस्वीर मेरी आँखों में उसकी लेकिन।
मेरी आँखों में उसे देखने का रोशनदान लगा दें 5
याद करता हू उसे तो आँखों से नदी सा झरना बहता है।
मेरा पैगाम पहुंचा दे उन तक जिसको मैं अपना समझता हू 6
जो मेरा नहीं उसे मैं अपना समझने लगा।
दुनिया की भीड़में अपनों को खोजने लगा 7

बिटिया रानी...!

प्यारी-प्यारी बिटिया...!

अभी-अभी मैं देख रहा हूं कि तू स्वयं तेरी पर्सनालिटी-आउटलुक के लिये तेरी जाग्रकताएं बढ़ गई है। बाथरुम से पहले एक ही साबुन रहता था अब लिक्विड शाप-शेम्पू, कंडिश्नर आदि की लाईनें लगी है। दर्पण के पास तेरा मेक-अप बाक्स, स्किनकेट और परफ्युम्स तो पड़े ही होते है। इस सबका उपयोग कर लेने के बाद भी तू दर्पण के सामने अच्छा खासा समय व्यतीत करती है।

शर्मा क्यों रही है बेटा....?

मैं तुझ पर टोंट थोड़ी कस रहा हूं और तुझे ये सब नहीं करना चाहिये। यह भी नहीं कर रहा हूं। यह तो एक वय-फेक्ट सहज वृत्ति-प्रवृत्ति है। इस उम्र में सुन्दर दिखने की लागनी विशेष होती है। मैं तो तुझे यह कहना चाहता हूं कि अच्छे दिखना याने क्या ?

तेरी कोई फ्रेण्ड फिल्मी एक्टरनी को भी टक्कर मारे ऐसी ब्यूटीफूल हो परन्तु उसका नेचर बिलकुल थर्ड क्लास हो। फोगट की निंदा करने का उसे शोक हो, छोटी-छोटी बातों में गुस्सा करती हो, गुस्से में वह क्या बोल रही है इसका उसे होश नहीं है। तो क्या वह तुम्हें अच्छी लगेगी ? क्या तू उसे सुन्दर कहेगी ? नहीं ना।

तो अब तू अच्छा क्या होता है यह समझ गई होगी ?

वास्तविक सौंदर्य शरीर का नहीं आत्मा का होता है और वह सौंदर्य है, सद्गुणों से।

सद्गुणों के सिवाय ब्राह्य रुप खूब ही भद्दा बन जाता है। तेरी ही बात करते है।

तू हंसती-गाती-खेलती-कुदती किसी को सहायता करती ही अच्छी लगती है परन्तु जब तू गुस्से में होती है, तर्क-वितर्क करती है, जीभा जोड़ी करती है, पैर पछाड़ती हुई चिल्लाती है तो जरासी भी अच्छी नहीं लगती है।

मेरी बिटिया...!

बात केवल तेरी ही नहीं बल्कि सभी की है। क्योंकि जब गुस्से में होता है तब अपना चेहरा दर्पण में देख लेना चाहिये। यदि अपना मुंह उस समय कांच में देखा तो शर्मा जाएगा। बेटा...!

मानव मेक-अप के अभाव में कदरुपा नहीं लगता, सद्गुणों के अभाव में कदरुपा लगता है। इसीलिए अच्छे या सुन्दर बनने के लिए उसे ब्यूटी पार्लर में नहीं बल्कि सद्गुण पार्लर में जाने की आवश्यकता है।

अपने देश की लाखों वर्ष की संस्कृति में माता-पिता और विद्या गुरु यह कार्य करने आए है। वे व्यक्ति के आंतरिक सौंदर्य को सोलह कला खिलाने का कार्य करते रहते हैं। जरुरी केवल इतनी सी है कि अपने को हकीकत में

✻ पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीजी म. ''राजहंस''

आवश्यकता क्या है ? यह समझ में आ जाना चाहिये।

मैं यह नहीं कहना चाहता हूं बेटा कि- तुझे बाह्य सौंदर्य के लिये बिलकुल लापखा बन जाता है। या एक भी सौंदर्य प्रसाधन का उपयोग नहीं करना है।

मेरी बात सिर्फ इतनी है कि अपने लिये ज्यादा आवश्यकता किसी की है। कौन सी वस्तु महत्व की है। कौन सी वस्तु पर ध्यान देने जैसा है वह वस्तु ही भूल जाए और नजीवी वस्तु सर्वेसर्वा बन जाए तब लगता है कि जिन्दगी को जुए के दांव पर लगा दी है।

My Dear...! इस विषय में एक बात कहना चाहता हूं कि कभी किसी खास उत्सव-महोत्सव में तू मेक-अप करें तब उसका मटिरियल नेचरल ही हो उसका खास ध्यान रखना।

Natural Means जिसका सोर्स वनस्पति जन्य ही हो पशु-पक्षी नहीं। बेटा...! शायद तुझे पता नहीं होगा कि व्हेल मछली की हत्या करके उसे पीसकर लिपिस्टिक बनाई जाती है उसका प्रयोग बंदरों पर किया जाता है, उसमें वे तड़प-तड़प कर मर जाते हैं।

मुंह पर लगाए जाने वाला लोशन, बंदरों की आँख और बंदरों के हृदय को पीसकर बनाया जाता है। उसमें कछुए का तेल भी मिलाया जाता है। सेन्टस् परफ्युम्स और डिओडोरंट बनाने के लिये हिरन, कस्तूरीमृग बीवर आदि की क्रूर हत्या कर बनते है। शैम्पू अण्डों में से बनता है उसका प्रयोग बिचारे निर्दोष खरगोश पर भयंकर अत्याचार करके किया जाता है। उसमें वे खरगोश अंधे हो जाते है और कभी-कभी तो मर भी जाते है।

सुअरों को जलती आग में सेककर उनके बालों में से मेकअप ब्रुश बनाए जाते हैं। बेटा...! मैंने स्वयं ने ये फोटो देखे है ऐसा कहने के बजाय यू कहूं कि मैं वे फोटु देख नहीं पाया तो अतिश्योक्ति नहीं है। उस दिन मैं भोजन भी नहीं कर पाया।

मुझे ख्याल है कि इन प्रोडक्ट्स के प्रोडक्शन और रिसर्च की फिल्म भी बनी है।

जिनके हृदय में थोड़ी भी मानवता शेष बची हो वे यह फिल्म देखकर कभी भी उन प्रोडेक्टस का युझ करने का विचार भी नहीं करेंगे।

My Dear...!

दूसरों को पीड़ा देकर, दूसरों को दुःख देकर, दूसरों को रुलाकर, तड़पा-तड़पाकर सुन्दर दिखाई देने की वृत्ति इंसान की नहीं हो सकती है। यह तो दण्डनीय अमानुषी अपराध है और ऐसा काम तो डाकन या राक्षसी ही कर सकती है।

बेटा...! तू स्वप्न में भी ऐसी मत बनना। तुझे तो देवी बनाना है- देवी। दया और करुणा की देवी बनाना है।

तेरे प्यारे-प्यारे डेडी !

जैन आचार्य एवं सूरी पद

जैन जगत में जो श्रमण परम्परा है वह मुनि पद से आरंभ होकर गणि, उपाध्याय, पंन्यास और आचार्य पद पर आकर पूर्ण करती है। आचार्य के 36 गुण ये बतलाये गये है- पांच इन्द्रियों को वश में रखने वाले नवनिध-ब्रह्मचर्य की मुक्ति को धारण करने वाले क्रोधादि चार प्रकार के कषायों से मुक्त इस प्रकार 18 गुणों से युक्त पांच महाव्रत के पालन करनेवाले पांच प्रकार के आचार का पालन करने में समर्थ पांच समिति, तीन गुप्तियों को धारण करने वाले आचार्य 36 गुणों से युक्त होते हैं। ऐसे 36 गुणों के भंडारी आचार्यश्री को इस पद तक पहुंचने के लिये कितनी कड़ी साधना से गुजरना पड़ता होगा। इस बात का अंदाज हमें हो जाना चाहिये।

नियत ध्वनि के समुह को मंत्र कहा जाता है, मंत्र वह विज्ञान या विद्या है जिसमें शक्ति का उद्भव होता है, मंत्र सिद्धी से साधक को अनेक प्रकार की लब्धियां प्राप्त होती है, अगर वह इनका उपयोग निःस्वार्थ भाव और शासन प्रभावक कार्यो में करता है तो साधक की ख्याति के साथ उसकी साधना और सिद्धी भी शक्ति शाली हो जाती है, दुरुर्पयोग या निजहित स्वार्थ से साधक की साधना का फल समाप्त हो जाता है।

जैन जगत मे मंत्र, तंत्र, यंत्र का विशिष्ट महत्व प्राचीन काल से ही रहा है, साधु-साध्वी भगवंतों ने अनेक बार जिन शासन पर आई विपत्ति और शासन की प्रभावना के लिये साधना, आराधना की है और वर्तमान युग में भी वे यह साधना करते हैं किंतु अधिकांश आराधना का एक मात्र उद्देश्य आत्म कल्याण का ही रहता है, कुछ साधना तो साधु-साध्वीजी को प्रतिदिन नियमित रुप से करना ही होती है, क्योंकि यह श्रमण परम्परा के अंतर्गत आवश्यक होता है।

आचार्य पद पानेवाले संतश्री को कान में दीक्षा स्वरुप सूरीमंत्र प्रदान किया जाता है, इस सूरी मंत्र को पानेवाले संत को आचार्य पद मिलने के बाद नाम के साथ सूरीश्वर नाम की पदवी लगाई जाती है।

सूरी मंत्र क्या है ?

तपागच्छ के महानायक श्री सोमदत्त सूरीश्वरजी महाराज के पट्ट प्रभावक श्री मुनिसुन्दर सूरी ने मेवाड़ के देवकुल पाठक (देलबाग) नगर में जब संघ लोगों पर महामारी का प्रकोप हो गया था तब आपने महामारी को शांत करने के लिये संतिकरं स्त्रोत (''संतिनाह-सम्द्द-टि्ठय रक्खा0'') की रचना की थी, स्त्रोतमें मूलरुप से श्री शांतिनाथ प्रभु की मंत्रों के द्वारा स्तुति की गई है। यह महाप्रभावक स्त्रोत है।

संतिकार सूरीमंत्र प्रभाववाला मंत्र है।

सूरीमंत्र से गणधर विद्या की सिद्धी प्राप्त होती है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं....

हमारी मातृभूमि भारत लंबे समय तक ब्रिटिश शासन की गुलाम रही जिसके दौरान भारतीय लोग ब्रिटिश शासन द्वारा बनाये गये कानूनों को मानने के लिये मजबूर थे, भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लंबे संघर्ष के बाद अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी मिली। लगभग ढाई साल बाद भारत ने अपना संविधान लागू किया और खुद को लोकतांत्रिक गणराज्य के रुप में घोषित किया। लगभग 2 साल 11 महीने और 18 दिनों के बाद 26 जनवरी 1950 को हमारी संसद द्वारा भारतीय संविधान को पास किया गया। खुद को संप्रभु लोकतांत्रिक, गणराज्य घोषित करने के साथ ही भारत के लोगों द्वारा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रुप में मनाया जाने लगा। भारत में निवास कर रहे लोगों और विदेश में रह रहे भारतीयों के लिये स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाना सम्मान की बात है। इस दिन का खास महत्व है लोगों द्वारा कई सारे क्रिया-कलापों में भाग लेकर और उसे आयोजित करके पूरे उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। इसका हिस्सा बनने के लिये लोग इस दिन का बहुत उत्सुकता से इंतजार करते हैं। पूरे भारत में इस दिन इस उत्सव पर खास कार्यक्रम किये जाते है। इस पर्व को मनाने के लिये स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी बेहद उत्साहित रहते है वे इसकी तैयारी करते हैं। इस दिन विद्यार्थियों अकादमी में, खेल या शिक्षा के दूसरे क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिये पुरस्कार, इनाम तथा प्रमाण पत्र आदि से सम्मान किया जाता है। पारावारिक लोग इस दिन अपने दोस्त, परिवार और बच्चों के साथ सामाजिक स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर मनाते है। इस दिन सभी को ये वादा करना चाहिये कि वो अपने देश की रक्षा के लिये हमेशा तैयार रहेंगे, देश की समरसता और शांति बनाये रखेंगे साथ ही देश के विकास में सहयोग करेंगे। आगमोद्धारक परिवार की ओर से सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

आरोप और चूगली के पाप से बचें....

परम पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय परम पिता परमात्मा चरम तीर्थपति श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी के चरण कमलों में कोटीशः नमस्कार पूर्वक....

काचकागलदोषेण, पश्येन्नेत्रो विपर्ययम्।
अभ्याख्यानं वदेज्जिव्हा, तत्र रोगः क उच्यते ॥

- कमला-पीलिया के दोष के कारण आंखों से विपरीत ही देखना और फिर भी आरोपात्मक ही बोलना वहां उसे रोग कैसे कहना ? देखना भिन्न और बोलना कुछ और ही भिन्न वह रोग है कि दोष है। पीलिया का रोग हो तो आंखों से सब कुछ पीला दिखता है। परन्तु जीभ पर कहां पीलिया होता है कि जहां आरोपात्मक उल्टा ही बोलें ? अब इसमें किसका रोग कहें ? आंख का कि जीभ का ? अभ्याख्यान में देखी हुई बात से विपरीत या भिन्न ही बातें जीभ से होती है।

वचन योग का व्यवहारः-

आत्मा को संसार में रहने के लिए मन-वचन और काया (शरीर) ये तीन साधन मिले है। यद्यपि संसार के समस्त जीवों को ये तीनों मिले ही हैं ? ऐसी भी बात नहीं है। कईयों को सिर्फ एक काया ही मिली है। एकेन्द्रिय के पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति के जीवों को सिर्फ काया ही मिली है। दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चउरिन्द्रिय के जीवों को और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के जीवों को भी शरीर और वचन ये दो ही साधन मिले हैं। जिसमें अलसिए, चिंटी, मकोड़े, खटमल, मक्खी, मच्छर, मेंढक आदि के जीवों की गिनती होती है। ये मनरहित जीव है और घोड़े-गधे, हाथी, ऊंट आदि पशु-पक्षी, मनुष्य, देव-नारक के संज्ञि पंचेन्द्रिय के जीवों को मन सहित तीनों ही कारण मिले हुए है। अतः जीव, मन, वचन और काया के त्रिकोण में रहता है और इन्हीं के द्वारा व्यवहार करता है। प्रवृत्ति-क्रिया करता है। जैसे मन से सोचने-विचारने का काम करता है। शरीर-काया से चलना, उठना, फिरना, खाना, पीना, आना, जाना, सोना आदि भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति करता है और वचन योग से वाग् व्यवहार, बोलने की प्रवृत्ति करता है।

यद्यपि दोइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय के पशु-पक्षी के जीवों को भी वचन योग मिला है और वे भी वाग व्यवहार करते है लेकिन उनकी वचन व्यवहार की भाषा सीमित है। एक-एक प्रकार के मर्यादित उच्चार से ज्यादा वे बोल नहीं सकते। अतः वाग् व्यवहार की प्रवृत्ति वहां पर कम है। सीमित है। अव्यक्त-अस्पष्ट है। जबकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज और परिवार के बीच रहता है। अतः सामाजिक संबंधों का पालन करना उसके लिये अनिवार्य है। समाज के स्नेही, संबंधी, ईष्ट मित्रवर्ग आदि के साथ व्यवहार करने के लिये वचन योग ही मनुष्य के पास प्रबल साधन है। चूंकि मनोयोग तो अपने ही विचारने-सोचने के काम आता है। काया-काययोग शारीरिक प्रवृत्ति में काम आती है। अतः पर-दूसरे के साथ के व्यवहार में वचन योग ही ज्यादा काम आएगा। यह स्वाभाविक है।

वचन योग की प्रवृत्ति वाग् व्यवहार करने की है जिसमें भाषा का प्रयोग होता है। यदि दूसरे के साथ कोई संबंध ही नहीं होता और कुछ काम ही नहीं होता तो दूसरी व्यक्ति के पास में होते हुए भी बोलने की आवश्यकता ही नहीं थी। लेकिन समाज में किसी से भी बोले बिना मनुष्य का व्यवहार करना समाज में आवश्यक है। मनोयोग के विचारों को दूसरों के सामने व्यक्त करने का माध्यम भाषा है और इस भाषा के प्रयोग का कार्य वचनयोग करता है। दूसरों के साथ का व्यवहार वचनयोग से ही होगा। वहां भाषा बोलनी पड़ती है।

18 पापों में वचनयोग के पापः-

''पाप की सजा भारी'' नामक प्रस्तुत पुस्तक में अठारह पापों का विवेचन क्रमशः किया जा रहा है। इन 18 पापस्थानों मन-वचन और काया के ही द्वारा किये गये पापों का विवेचन है। आखिर आत्मा को जो प्रवृत्ति संसारी अवस्था में करनी है वह सारी मन-वचन-काया के त्रिकोण में रहकर ही करनी है। चाहे अच्छी करें या खराब करें ? तो भी इन तीनों के माध्यम से ही करनी है। उमास्वाति महाराज तत्वार्थाधिगम सूत्र में फरमाते हैं कि **काय-वाड़-मनः कर्मयोगः ॥** काया-वचन और मन के द्वारा ही कर्म का योग होता है। वह शुभ हो तो पुण्य के रुप में औरअशुभ हो तो पाप के रुप में गिना जाता है। ये ही मन-वचन और काया पाप करानेवाले हैं और ये ही पुण्य भी करानेवाले है और ये ही कर्म बंधानेवाले है और कर्म की निर्जरा भी ये ही करानेवाले है। ये तीनों जड़ है। इनके बीच में आत्मा रही हुई है। अतः ये न तो अच्छे है और न ही बुरेहै। जैसा इनका उपयोग किया जाय वैसे है।

इन्हीं तीनों की अशुभ प्रवृत्ति पाप है। अतः अठारह पाप स्थानों में मन के पाप, वचन के पाप, शरीर (काया) के पाप और तीनों के मिलकर जो पाप होते हैं उनके पाप गिनाए गए है। आज हम वचन योग के कुछ पापों का विवेचन यहां करें।

वचन योग के पापः-

मृषावाद, क्रोध, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, मायामृषावाद।

18 पापस्थानों के लगभग इन 7 पापस्थानों में वचनयोग की मुख्यता है। भाषाकीय व्यवहार की अशुभता से इन पापों का सेवन होता है। मृषावाद में झूठ बोलने की बात है, तो क्रोध में भी आक्रोश पूर्वक बोलने की बात है। कलह-झगड़ों में भी बोलने का ही व्यवहार है। अभ्याख्यान में किसी पर आरोप डालने में भी वचन व्यवहार है। पैशून्य में चुगली खाने की बात भी वचन व्यवहार है। परपरिवाद में पराई निंदा करने की प्रवृत्ति मैं भी वचनयोग का ही कार्य है और मायामृषावाद अर्थात् कपटवृत्ति से झूठ बोलने में भी वाणी का व्यवहार ही मुख्य है। अतः अठारह पापस्थानों में ये सात पापस्थान मुख्य वचनयोग के है। वाणी पर संयम न रहने से, वचनयोग की गुप्ती न रहने से ये पाप खड़े होते हैं और इनकी अशुभ प्रवृत्ति होती है। मृषावाद, क्रोध, कलह के पापस्थानों का क्रमशः विवेचन करते आए हैं। अब 13 वें, और 14 वें क्रम पर आए हुए अभ्याख्यान और पैशून्य वृत्ति के पापों का विचार करें।

अभ्याख्यान का क्या अर्थ है ?

''अभि'' उपसर्ग पूर्वक आख्यान-करना अर्थात् भाषण करना यह अभ्याख्यान कहलाता है। श्री भगवती सूत्र के पांचवें शतक के छट्ठे उद्देश्य की टीका में टीकाकार फरमाते हैं कि- ''अभिमुखेन आख्यानं दोषाविष्करण मभ्याख्यानम्'' अभिमुख-सामने होकर दोषों को प्रगट करने रुप जो कथन है वह अभ्याख्यान कहलाता है यही अर्थ स्थानांग सूत्र के प्रथम अध्ययन के 48,49 वें सूत्र की टीका में टीकाकार लिखते हैं- ''अभ्याख्यानं-प्रकटम सद्दोषारोपणम्'' प्रगट रुप से, जाहीर रुप से जो नहीं है ऐसे झूठे दोषों का आरोपण करके बोलना यह अभ्याख्यान कहलाता है। अतः संक्षिप्त एक शब्द में आरोप लगाना, कलंक लगाना, कहते हैं। दोषारोपण करना, दोष देना, आक्षेप करना, ये अभ्याख्यान कहलाते हैं। गुजराती में जिसे आल चढ़ाववुं, आल देवुं कहते है। वाचकश्रेष्ठजी कहते है-

पापस्थानक तेरमुं, छांडीए, अभ्याख्यान दुरतो जी।
अछतां आलजे परनां उच्चरे,दुःख पामे ते अनंतोजी ॥
धन्य धन्य ते नर जे जिनमते रमे...?

अछते दोष रे अभ्याख्यान जे...।

दोष न होते हुए भी दोष का आरोपण करना यह दोषारोपण अभ्याख्यान कहलाता है। जिसे तेरहवां पाप स्थान कहा गया है। वचन योग के वाग्-व्यवहार की यह कुटेव है।

महासती सीता पर दोषारोपणः-

रामायण की यह बात है। धोबी के घर में धोबन के साथ धोबी का कुछ कलह हो गया। धोबन घर छोड़कर चली गई। 4-6 दिन किसी के यहां रह कर वापिस आई। पति ने निवेदन किया कृपया मुझे वापिस घर में लीजिए। धोबी ने उत्तर देते हुए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया कि- मैं थोड़ी राम हूं जो तुझे वापिस घर में ले लूं। घर से निकल कर गई हुई और दूसरों के यहां रही हुई स्त्री को मैं नहीं स्वीकारता। राम ने सीता को कैसे स्वीकारी ? पत्नी ने कहा-आप ऐसे महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और महापवित्र सती सन्नारी सीता के विषय में ऐसा क्यों बोलते है ? यह उचित नहीं है। सीता जैसी महासती के विषय में अंश मात्र शंका भी करनी अर्थात् सूर्य में अंधकार को देखने जैसी बात है। यह सुनकर धोबी ने कहा- छोड़ो राम-सीता की बात परन्तु मैं तुमको तो घर में नहीं लूंगा।

पति-पत्नी के कलह में धोबी की यह बात अड़ोस-पड़ोस में होते हुए श्री राम के पास पहुची। रामचंद्रजी ने सोचा यह क्या बात है ? अग्निपरीक्षा में भी सीता पवित्र ठहरी है फिर भी समाज में, प्रजा में ऐसी बात क्यों चल रही है ? मर्यादा पुरुषोत्तम और न्यायप्रिय राजा के रुप में रामचंद्रजी की प्रसिद्धि थी। उसी क्षण उन्होंने सीता को राजमहल से निकाल दी। रावण के हाथ से निष्कलंक छूटकर आई हुई सीता स्वदेश में कलंकित हुई। दोषारोपण से भारी हुई। सीता के ऊपर झूठे दोषारोपण हुए। आखिर सीता को राम की आज्ञा से घर छोड़कर निकल जाना पड़ा। ऐसे समय में जब सीता निकली तब गर्भवती थी। वह जंगल में गई। किसी आश्रम में आश्रय लिया और काल व्यतीत किया। लव और कुश जैसे दो बालकों को जन्म दिया। संतानों को पाल-पोष के बड़ा किया और अन्त में सीता भूमि में समा गई। सोचिए कितनी पवित्र सन्नारी महासती सीता के ऊपर भी अभ्याख्यान वृत्ति के लोगों ने अभ्याख्यान किया। कलंक लगाया। दोषारोपण किया। सीता को कितना सहन करना पड़ा ? इस दृष्टांत से अभ्याख्यान का स्वरुप समझ में आ गया होगा। **(आगे और भी है...!)**

पर्युषण : विरक्त और वैराग्य का पर्व

पर्युषण का पहला दिन:-

✻ क्षमा धर्म क्षमा का दीप जलाकर क्रोध का भूत भगाओ।

✻ क्षमा रुपी सूरज के आगे क्रोध को अंधेरा टिक सकता ही नहीं सकता, जहां सूरज है वहां अंधेरा नहीं, जहां क्षमा है वहां क्रोध नहीं।

तुम सारी रात अंधेरा को भगाने के लिये लकड़ी पटकते रहो, तुम थक जाओगे, लकड़ी टूट जायेगी, लेकिन अंधेरा नहीं भागेगा। मेरे भाई, अंधेरे को भगाने के लिये डंडे की जरुरत नहीं होती। तुम उस अंधेरों में बस एक दीप जला दो। अंधेरा दीपक के जलते ही टिक नहीं पायेगा। भगवान महावीर ने क्रोध को बुरा नहीं कहा, उन्होंने तो क्षमा का स्वागत किया है। क्रोध को बुरा कहने से नहीं बल्कि क्षमा धारण करने से क्रोध स्वयं ही छुट जाता है। अपने जीवन में क्षमा का दीपक जलाए रखोगे तो क्रोध तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। एक बार अंधेरे ने ईश्वर से शिकायत की कि इस सूरज ने मेरी आफत कर दी है, वह आते ही मुझे भगा देता है।मेरा जीना मुश्किल कर दिया है, ईश्वर ने जब सूरज से कहा कि अंधेरे को क्यों परेशान करते हो उसे भी जीने दो,तब सूरज ने कहा कि हे भगवन अंधेरा मुझसे आकर मेरे सामने बोले कि मैंने उसे परेशान किया है,अरे अंधेरे की क्या हिम्मत कि वह सूरज के सामने खड़ा हो जाए।भगवान महावीर हमारे हाथ में क्षमा रुपी ऐसा सूरज रखे गये है जिसमें वैचारिक प्रदूषण से हमारा जीवन खंडित नहीं हो सकता है।

<u>व्यक्तिभूख प्यास तो सेवन कर लेता है किसी की बात सहन नहीं करता</u>

तुमसे कहा जाए कि दिन भर निर्जला उपवास कर लो तो बड़ी सहजता से कर लेते हो, व्यक्ति भूख, प्यास तो सहन कर लेता है, लेकिन किसी की एक बात सहन नहीं करता। मेरे भाई क्षमा का नीर अपने पास हर वक्त रखो। फिर देखो,क्रोध की अग्नि तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।

पर्युषण पर्व का दूसरा दिन:-

✻ धर्म जीवन को सरल, सहज और मधुर बनाओ।

✻ बिना विनम्रता और सरलता के मानव जीवन की सार्थकता नहीं।

✻ अहंकार सबसे बड़ी समस्या, समर्पण है इसका समाधान।

✻ दौलत को नहीं, दिलों को जीतना सीखो।

धर्म का अर्थ होता है कोमलता, विनम्रता का भाव होना। जीवन को सरल, सहज और मधुर बनाओ, आज व्यक्ति के जीवन की मूलभूत समस्या है अहंकार। आज मानव अहंकार से भरा जा रहा है। आपने चक्रवर्ती के वैभव के बारे में तो सुना ही होगा, एक चक्रवर्ती छः खण्ड का अधिपति होता है, जिसके 96 हजार रानियां, 18 करोड़ घोड़े, 84 लाख हाथी हों उसे भी इतना अहंकार नहीं होगा, जितना आज थोड़ा सा धन आ जाने से तुम्हें हो जाता है। विचार करो आखिर क्या है तुम्हारे पास, किस बात का अहंकार करते हो, तुम्हें कुछ मिला है यह बुरा नहीं लेकिन मिलने के बाद इंसानियत से नाता तोड़ना बुरा होता है। मेरे भाई, अहंकार से ज्यादा अकड़ो मत, क्योंकि अकड़-मकड़ कर चलता है यमराज उसे जल्दी पकड़ता है और जो विनम्रता से जीवन जीता है उसकी दीर्घायु होती है। **दौलत को नहीं दिलों को जीतना सीखो।** याद रखना मेरे भाई दौलत से व्यक्ति बड़ा नहीं होता, जो किसी के काम न आये वह काहे का बड़ा आदमी। अरे बड़ा तो वहीं होता है जिसमें बड़प्पन हो, बड़ों को सम्मान करने का और छोटों को वात्सल्य देने का गुण हो, जिसका जीवन दूसरों के काम आये। दौलत तो आज है कल न रहे पर जो लोग विनम्रता से जीवन जीते है वह सभी के चहेते होते है। भगवान श्रीमहावीर कहते है कि असफलता में हताश मत हो और सफलता मिलने पर अभिमान मत करो। जो लोग दोनों परिस्थितियों में समभाव रखते हैं वह सम्यक दृष्टि होते हैं।

अहंकार के पास पैर तो होते हैं आंखें नहीं होती, अहंकार अंधा होता है। उसके पास पैर तो होते है पर आंखें नहीं होती। तभी तो रावण के पास नेत्र होते हुए भी अहंकार में अंधा हो गया था। उसे लंका की बर्बादी नहीं दिख रही थी। अहंकार भीतर की आंखें फोड़ देता है। इस अहंकार से बचने के लिये जीवन में सरलता और सहजता को स्वीकार करो।

तीसरा दिन-

✻ जो सरल है वही संत है नजरों से जो गिर जाए, मुश्किल है सम्हल पाए।

✻ मन वचन काय की कुटिलता को त्याग कर जीवन में लाओ सरलता।

सरलता के भावों को आर्जव धर्म कहते हैं जो दूसरों को छलता है उसके सीने में छाले हो जाते हैं। दूसरों को धोखा देने वाला एक दिन खुद धोखा खाता है। **जिसकी नीयत खराब उसके नतीजे भी खराब ही होंगे।** तुम कोई भी काम करके देख लो यदि तुम्हारे मन में खोट है तो निश्चित ही

परिणाम गलत आयेंगे।

मायाचारी का जीवन मत जीओ। जिसके अंतरंग में कुछ हो बाहर कुछ और हो ऐसा जीवन तो मायाचारियों का होता है। तुमने बगुला देखा होगा, जब नदी के किनारे वह पानी में श्वेतता को धारण किये खड़ा होता है तो ऐसा लगता है कि वह ध्यान में हो, लेकिन बगुला का ध्यान तो मछली पर होता है। मेरे भाई तुम मछली पर नहीं श्रीमहावीर पर ध्यान लगाओ। सावधान रहो ऐसे लोगों से जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं, ध्यान रखना अत्यधिक चापलूसी करने वाला भी तुम्हारी जड़ों को काट सकता है। चापलूस लोग भी बगुले के समान होते है, दिखाते कुछ है और होते कुछ और है। इससे तो कौआ अच्छा होता है जो अंदर से भी काला और बाहर से भी काला दिखता है। मेरे श्रीमहावीर कहते है दोहरा जीवन मत जीओ, तुम बाहर से जैसे सरल दिखाते हो उतना ही भीतर से भी सरल और सहज बनो। मन, वचन, काय की कुटिलता को त्याग कर जीवन में सरलता, सहजता आने को ही आर्जव धर्म कहा जाता है।

> ***✻ तरणतारणहार श्री जिनेश्वर भगवंतों ने संसार सागर से पार होने के लिये नौका समान जिनधर्म के चार प्रकार सुपात्र दान निर्मल शील, विविध प्रकार की शुद्ध तपश्चर्या एवं शुभभावना आदि का उपदेश दिया है जो इस महान उपदेश को जीवन में आत्मसात करता है वो आत्मकल्याण पाकर सिद्धपद पा लेता है-शाश्वत सुखभोगी बन जाता है। अजर-अमर निरंजन बनता है...!***

<u>छल कपट से मिली सफलता दुःख ही देगी</u>

तुम कितना भी मायाचारी, छल कपट कर लो लेकिन सफलता से दूर ही रहेंगे और तुमने जोड़-तोड़ के सफलता हासिल कर भी ली तो यह बात मानकर चलना इस अधर्म की सफलता से तुम्हें सुख नहीं मिल सकता। अरे सफलता तो पुण्य पाप के संयोग और व्यवस्थित तरीके से किये गये पुरुषार्थ से मिलती है। कहते है पुण्य का उदय आता है तो हाथ में रखी मिट्टी भी सोना बन जाती है और पुण्य क्षीण होता है तो हाथ में रखा हुआ सोना भी राख बन जाता है।

चौथा दिन-

✻ संतोष के जल से करो मन को पवित्रा

✻ तन के साथ मन को भी धो लो।

✻ अपने मन को निर्मल और पवित्र बनाओ।

✻ दौलत की चकाचौंध में विनम्रता को मत छोड़ो।

गंगा में नहाने से ही यदि मानव पवित्र हो जाए तो उस पानी में रहने वाली मछली तो सबसे ज्यादा पवित्र हो जाए, फिर उसमें से दुर्गन्ध क्यों आती है। इस कलयुग में तो गंगा भी मेली हो गई है, प्रदूषित हो गई है। गंगा में नहाने से तन की पवित्रता तो आ सकती है, लेकिन मन की पवित्रता के लिए तो संतोष के जल से अपने विचारों में निर्मलता लाना होगी। भगवान श्रीमहावीर ने तन की शुद्धि पर ध्यान नहीं दिया उन्होंने तो मन तथा आत्मा की शुद्धि को अधिक महत्वपूर्ण बताया। तुम अपने मन को निर्मल और पवित्र बनाओ तो एक दिन ईश्वर तुम्हें खोजता हुआ तुम्हारे पास आ जायेगा। तुम महान पुण्य लाये हो तो दौलत तो मिलेगी ही, बस इस दौलत को पाकर तुम्हारे भीतर बदसलूकी की दुर्गन्ध न आये। धनवान होते हुए भी विनम्रता की सुगंध आना चाहिये। जैसे हीरा अपना मूल्य स्वयं नहीं बताता तुम भी हीरे के समान बनो। आज इंसान के पास चार पैसे क्या आ जाते है उसके विचार और उसका व्यवहार बहुत हल्का हो जाता है। जीवन में प्रभु की कृपा अवश्य कमाओ यही तुम्हारे साथ जायेगी।

<u>मन मैला और तन को धोए, कैसे आतम शुद्ध होय</u>

मान्यवर, सारा जीवन हो गया इस तन को धोते हुए और कब तक धोते रहोगे। क्या समझते हो कि इस तन को धोने से आत्मशुद्धि हो गई, नहीं मेरे भाई, अभी मन को मांझना शेष है। आत्मसाधना के लिये अपने मन को निर्मल बनाओ, यह अकड़, अभिमान, कटुता, लोभ के भावों को निकालना होगा। भीतर की पवित्रता से अंतरंग में सत्य का दीपक जल उठेगा।

पर्युषण पर्व का पांचवा दिन-

✻ सत्य को अंतरंग से प्रकट होना चाहिये।

✻सत्य कड़वा नहीं मधुर होता है,कड़वा तो मन होता है।

इस दुनिया में सत्य को अपमानित किया जाता है, यह दुनिया सत्य को सहजता से नहीं स्वीकारती। क्योंकि सत्य अकेला खड़ा होता है झूठ के साथ पूरा गिरोह होता है फिर भी अंतिम विजय सत्य की ही होती है। कहा जाता है कि सत्य कड़वा होता है यह तो सत्य पर मिथ्या लांछन है, सत्य तो स्वाभाविक रुप से मधुर होता है। सत्य में तो प्राकृतिक मिठास होती है, मन और सोच कड़वे होंगे तो सत्य कड़वा लगेगा। मेरे भाई सत्य से ज्यादा सुखद कुछ नहीं होता। मुख से सत्य

बोल भी दिया जाए तब भी मन तो षड्यंत्र में लगा रहता है इसीलिए सत्य मात्र वचनों तक सीमित नहीं हो सकता, सत्य अंतरंग से प्रकट हो जाना चाहिये। सत्य का साथ देने वाला परेशान तो हो सकता है, परास्त नहीं हो सकता। तुमने तीन घंटे की फिल्म में देखा होगा कि ढाई घंटे तक असत्य के रुप में विलेन हीरो पर हावी होता है, खूब षडयंत्र रचना हे लेकिन फिल्म के अंत में जीत हीरो की, सत्य की ही होती है, कुछ भी कर लो सत्य तो जीतकर ही रहेगा।

परीक्षा सत्य की ही होती है

नकली नग को कोई नहीं परखता, परख तो हीरे की ही होती है। जो औरों के लिए जीता है वह अमर हो जाता है। जिसने विष पीया वह शंकर हो गये, जिसने जहर का प्याला पीया वह मीरा बन गई, जिसे छेदा गया वह मोती बन गया, जिसे काटा गया वह हीरा बन गया, सत्य की परीक्षा में जो सफल हो जाता है वह निखार जाता है।

पर्युषण पर्व का छठवां दिन–

✻ जीवन को अनुशासित करना है संयम।

✻ संयम का नाम दूसरा नाम होता है जीवन की सुरक्षा।

✻ बिना संयम और नियम के जीवन की यात्रा लक्ष्यविहीन।

जब एक बेल बांस से बंधती है तो वह ऊपर की ओर उठती है, और एक बाल्टी की कड़ी में रस्सी बांध दी जाती है तो वह बाल्टी कितनी भी गहराई में चली जाए वह रस्सी उसे निकाल ही लायेगी, मेरे भाई इस जीवन की बेल धर्म के बंधन से बांध दो तो निश्चत जीवन ऊपर ही उठेगा। सत्य बड़ा नाजुक होता है, जीवन में सत्य आ भी जाए तो उस सत्य को समय की आंधियों से बचाने के लिए अपने मन के दीये पर संयम का एक कांच लगा लो। यह मन जिज्ञासाओं से भरा होता है, कैसे मिटेगा मन के यह विकल्प, मैं कहता हूं तुम संकल्प करो विकल्प स्वयं ही मिटेगा।

संयम का दूसरा नाम जीवन की सुरक्षा है, संयम की पटरी पर चलने वाली गाड़ी मोक्ष के स्टेशन पर पहुंचती है। असंयमी व्यक्ति उस कोहलू के बैल के समान होती है जो चलता तो दिन भर है लेकिन पहुंचता कहीं नहीं है, ऐसे ही जिसके जीवन में कोई संयम नहीं, नियम नहीं, संकल्प नहीं उसके मानव जीवन की यात्रा सार्थक नहीं हो सकती। जीवन को ऊंचाईयों पर ले जाने के लिये कुछ तो नियम बंधना होगा मेरे भाई। जैसे हाथी को वश में करने के लिये अंकुश का होना जरुरी है, वैसे ही इस मन के हाथी पर संयम का अंकुश जरुरी होता है। मैं तो कहता हूं बिना संयम के जीवन की यात्रा लक्ष्य विहीन होती है।

हर परिस्थिति में जीना सिखाता है संयम

जो लोग संयम और नियम में बंधकर जीवन जीते है वह हर परिस्थिति में जीना सीख जाते है, जैन दर्शन के अनुसार व्यक्ति का समय एक सा नहीं रहता, पता नहीं कब कैसी परिस्थिति निर्मित हो जाये, जो संयमी व्यक्ति सब कुछ ऐसे होते हुए भी सीमितता में जीवन जीता है वह प्रतिकूल परिस्थिति में आनंद के साथ जीवन जी लेता है।

पर्युषण पर्व का सातवां दिन –

✻ आत्मा तपने के बाद ही परमात्मा बनती है।

✻ बिना शरीर को तपाये आत्मा नहीं निखरती।

जो तपता नहीं है वह पकता नहीं है, सोना भी तपने के बाद निखरता है, रोटी भी पकने के बाद स्वादिष्टहोती है, ऐसे ही आत्मा भी जब तक तपेगी नहीं वह परमात्मा नहीं बन सकती, संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनका जीवन देखो कितनी तपस्या की है उन्होंने, एक डॉक्टर, इंजीनियर वकील, वैज्ञानिक को देखो उन्होंने भी कितनी साधना की होगी इस मुकाम तक पहुंचने में। आत्मा में परमात्मा को देखने वाला सम्यक दृष्टिहोता है, जैन दर्शन के अनुसार आत्मा को शुद्धात्मा बनाने के लिये स्वयं की तपस्या की भट्टी में झौंकना पड़ता है। भगवान श्रीमहावीर कहते हैं कि मात्र भोजन को छोड़ना ही तपस्या नहीं है, मन पर संयम रखकर आत्म साधना करना तप होता है, मेरे भाई मात्र इस शरीर को सुखाने से कुछ नहीं होगा, अपने कर्मो को सुखाने का प्रयास करो, पर्वत की चोटी पर बैठ जाने का अर्थ तप नहीं होता, इस संसार में रहकर भी जैसे कीचड़ में कमल की तरह जीवन जीओ, कीड़े म कोड़े की तरह कीचड़ के भीतर डुबकी मत लगाओ।

आत्मा को तपाने के लिये पहले शरीर को तपाना होगा

किसी ने मुझसे पूछा कि– जब यह कहा जाता है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है तो फिर आत्मा को तपाने के लिए इस शरीर को क्यों कष्ट देते हो, मैंने उस व्यक्ति से कहा कि जब तुम दूध गरम करते हो तो उसे बर्तन में डालकर आग पर रखते हो तो बताओ कि पहले दूध गरम हुआ या बर्तन। जैसे बिना बर्तन गरम हुए दूध गरम नहीं हो सकता वैसे ही बिना शरीर की तपस्या के आत्मा नहीं तप सकती।

पर्युषण पर्व का आठवां दिन–

✻ जीवन में अर्जन के साथ विर्सजन भी आवश्यक है।

✻ ज्यादा परिग्रह करने से नरक की यात्रा होती है।

✻ जोड़ने के साथ छोड़ना भी सीखो।

✻ जिंदगी में यदि जोड़ते ही गये, कुछ न छोड़ा तो डुब जाओगे।

✻ त्याग से पाप का मूल चुकता है, दान से पाप का ब्याज चुकता है।

जोड़ना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन जोड़ने के साथ छोड़ने की भी कला सीखो। जैन दर्शन के अनुसार तो हिंसा, चोरी, झूठ से भी बड़ा पाप परिग्रह का बताया है, परिग्रह का अर्थ है अपनी आवश्यकता से अधिक जोड़ना, कहा जाता है यह धरा पर जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके त्याग से दुनिया उन्हें पहचानती है,लेकिन आज जमाना बदल गया है जो जितना परिग्रह और धन जोड़ता है उसे उतना ही सम्मान मिलता है। एक हत्यारा, चोरी करने वाला या झूठ बोलने वाले को दुनिया घृणा की निगाह से देखती है, लेकिन जो परिग्रह करके अपनी तिजोड़ी भरता है लोग उसका बड़े ही आदर के साथ नाम लेते है, मैं कहता हूं सम्मान जोड़ने का नहीं त्याग का होना चाहिये, मेरे श्रीमहावीर तो कहते हैं कि अत्याधिक परिग्रह करने वाला नरक गति में जाता है।

<u>जो लूटाता है वह पाता है, जो छुपाता है वह उखाड़ा जाता है।</u>

तुमने देखा होगा आम, अमरुद, अनार के पेड़ अपने फलों को दूसरों को देते रहते हैं और एक बार बसंत के बाद उसमें फिर से फल आ जाते हैं और आलू,प्याज,गाजर,मूली को जमीन में छुपा कर रखते हैं वह जड़से उखाड़ दिये जाते हैं। मेरे भाई तुम्हें जो मिला है वह तुम्हारे पुण्य से मिला है, तुम उसका उपयोग अपनी आवश्यकता में करो और अतिरिक्त धान को गरीब,असाह तथा धर्म के क्षेत्र में लगाओ। धन को अत्याधिक जोड़ते हुए पाप के गठरी को भारी मत करो।

✻ जहां न रहे संकल्प विकल्प वही है आकिंचन्य धर्म

✻ मैं और मेरे पन को त्यागो, तभी आत्मस्वरुप को जान पाओगे।

✻ धर्म कहता है अधिकारों की बात नहीं, कर्त्तव्यों का निर्वाह करो।

✻ भावना ऐसी हो-गुणीजनों को देख हृदय में प्रेम के भाव उमड़ जाए।

जीवन में सन्यास आ जाए और उस सन्यास का भी अहंकार हो जाए तो मेरे भगवान महावीर कहते है कि ऐसा सन्यास तुम्हारे आत्म कल्याण में कभी सार्थक नहीं होगा। जहां संकल्प विकल्प न रहे वही तो आकिंचन्य धर्म होता है, लोग सब कुछ पा लेते हैं और सब कुछ पाने के अहंकार की चादर भी ओढ़ लेते हैं, अहंकार से भर जाते है, ऐसा व्यक्ति सब कुछ पाकर भी खाली हाथ ही रहता है, मैं पूछता हूं कि किस बात का अहंकार करता है आदमी, क्या लेकर आया था और क्या लेकर जायेगा, मेरे भाई जो पाया है इस संसार से मिला है, और जो त्यागा है वह स्वयं के हित के लिए त्यागा है।

मैं और मेरे पन का भाव जब तक अंतरंग में रहेगा तब तक तुम आत्म स्वरुप को नहीं पहचान सकते और बिना आत्मा के स्वरुप को पहचाने कैसे होगा, आत्मा का कल्याण। जैन दर्शन कहता है कि यदि साधना बाहर की होगी तो व्यक्ति अहंकार के भाव से भर जाता है लेकिन जब अंतरंग में उतरना है तो भावों में किंचित भी मैं और मेरा पन का भाव न रहे।

<u>कौन किसका पालनहार है</u>

तुम क्या यह सोचते हो कि तुम किसी को पाल रहे हो, यह दुनिया, यह समाज, यह घर तुम्हारे बलबूते पर चल रहा है, मिटा दो यह गलत धारणा, यह दुनिया है कल भी चलती थी और जब तुम नहीं रहोगे तब भी चलेगी। जो जीव इस दुनिया में आता है वह अपना पुण्य लेकर आता है, तुम किसी को क्या पालोगे।

एक छिपकली सोचती है कि यह मैं न रहूं तो यह छत गिर जायेगी, इस तरह की सोच में जीवन मत जीओ।

✻ अपनी ऊर्जा का नाश मत करो, ऊर्जा को जीवन के सृजन में लगाओ।

✻ संतान को तो जानवर भी जन्म देता है, हृदय में परमात्मा को जन्म दो।

✻ ब्रहमचर्य की साधना से होता है आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त।

व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा का स्त्रोत नाभि में होता है, वासना से ऊर्जा नीचे की ओर साधना से ऊर्जा ऊपर की ओर प्रभावित होती है, ब्रहमचर्य की साधना बड़ी ही कठिन साधना होती है, मोक्ष महल का अंतिम सौपान ब्रहमचर्य होता है, ब्रहम नाम है आत्मा का, आत्मरमण, आत्मलीनता, आत्मचर्या में जीना ही ब्रहमचर्य है।

काम से पैदा होकर राम में जीवन जीना ही मानव जीवन की उत्कृष्ट सफलता होती है, मेरे भाई तुम कमल की तरह जीवन जीओ। कमल पैदा तो कीचड़ में होता है, लेकिन वह कीचड़ से ऊपर उठकर स्वच्छता का जीवन जीता है, तुम भी संसार में विषय वासनाओं के बीच रहते हुए निर्विकार और ब्रहमचर्य धर्म को अपनाते हुए परमात्मा को पाने का निरंतर प्रयास करते रहो।

ब्रहचर्य की साधना ही मुक्ति की युक्ति है- सन्यास की राह पर बढ़ने के लिये ब्रहमचर्यमय जीवन अत्यंत आवश्यक है, मैं तो कहता हूं कि ब्रहमचर्य की साधना ही मुक्ति की युक्ति है। आत्मस्वरुप होकर आत्मसाक्षात्कार, आत्मसंवाद से अपने आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें।

इस पर्युषण पर प्रतिष्ठ की प्रतिस्पर्द्धा के बजाए वैचारिक प्रदूषण का करें प्रक्षालन

भारतीय संस्कृति के विविध रंग हैं। हमारी धार्मिक एवं सामाजिक संस्कृति का हर पहलु मानव को शिक्षाप्रद संदेश देता है। पर्व आते हैं, त्यौहार मनाए जाते हैं और लोग उल्लास में डूब जाते हैं लेकिन यह नहीं देखते कि यह पर्व क्यों मनाया जा रहा है ? इसके पीछे क्या संदेश छिपा है और हमें क्या आत्मसात करना है, क्या छोड़ना है, जिस दिन हम यह भली-भांति जान जाएंगे, तो हमारा पर्व मनाना सार्थक हो जाएगा, उसी दिन हमारा जीवन परिवर्तन हो जाएगा। मैं बात कर रहा हूं इस समय मनाए जाने वाले जैनियों के सबसे बड़े महापर्व पर्युषण की। क्या है पर्युषण पर्व और क्या है इसे मनाने के पीछे मूल उद्देश्य ? आज हम इसी पर विचार और विश्लेषण कर रहे हैं। **विचारों के प्रदूषण का प्रक्षालन करना ही पर्युषण है लेकिन हमने कभी विचारों का प्रदूषण दूर करने का यत्न ही नहीं किया,** हम इस पर्व की मूल भावना तक पहुंचे ही नहीं, इसके इर्द-गिर्द के आभा मण्डल और दिखावटीपन में ही मग्न रहे।

दिखावट के बजाए आत्मशुद्धि में लगाओ मनः-

आज हमने साधना के पर्व को भी ''मानव प्रतिष्ठा'' का अवसर और विषय बना लिया है। प्रत्येक जैन अपने जीवन में 50 -60 तो पर्युषण पर्व तो मानता ही होगा लेकिन यदि हमने सिर्फ10 पर्युषण पर्व भी आत्मशुद्धि के लिए समर्पित कर दिए तो निश्चित ही जीवन सार्थक हो जाएगा और पर्व भी मन जायेगा लेकिन खेद की बात है कि हममें से कितने लोग है जो ऐसा करते हैं ? हमने तो इस पर्व को भी प्रतिस्पर्द्धा का विषय बना लिया है। आत्मशुद्धि की साधना के बजाए सभी लोग इसी विचार-मंथन में व्यस्त रहते हैं कि विगत पर्युषण पर्व पर मेरा सिर्फ एक मकान था, इस बार तीन हो गए, भले ही उनमें से दो मकान खाली पड़े हों और पिछले पर्युषण पर मेरे पास दो जोड़ी सूट या दो साड़ियां थी और इस बार चार जोड़ी सूट और चार साड़ियां हो गई। इस बार तो नाते-रिश्तेदार तो भी बढ़ गए या फिर हम आत्मशुद्धि के लिये प्रयत्न करने के बजाए यह विचार करने में लगे रहते हैं कि विगत पर्युषण पर्व पर अमुक साधु-संत की सीमित प्रतिष्ठा थी जो इस बार बढ़ गई है।

कीमत संख्या की नहीं, साधना की है....

मात्र उपवास करने का नाम ही पर्युषण नहीं है, लोग तो बस यही सोचते है कि अमुक ने कम उपवास किये और मैंने ज्यादा, उसकी शोभायात्रा कम गाजे-बाजे से निकली और मेरी शोभायात्रा ज्यादा धूमधाम से निकली, इससे काम नहीं चलेगा। इस दिखावटीपन व प्रतिस्पर्द्धा से उबरना होगा। इन संकीर्ण चर्चाओं और छोटी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। कीमत संख्या की नहीं बल्कि साधना की होती है। हमें चिन्तन करना होगा कि कहीं हमारी तपस्या और त्याग भी दिखावा तो नहीं बनती जा रही है। कहीं अपनी तपस्या को दिखाकर उसका पुण्य क्षीण तो नहीं कर रहे। **पर्युषण नए आकर्षक कपड़े पहनने या श्रृंगार कर सजने-धजने का त्यौहार नहीं है बल्कि यह साधना का पर्व है। देह से ज्यादा विचारों की साधना करें।** बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि पूरे देश में ही पर्युषण का ऐसा स्वरुप हो गया है। तुम खूब नाच-गा लिए लेकिन पर्युषण तो वास्तविक तौर पर मना ही नहीं पाए। हकीकत में तो आज तक जीवन में पर्युषण आया ही नहीं, यदि एक ही आ जाए तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं बता रहा हूं कि यह पर्व आत्मशुद्धि व आत्म प्रक्षालन के लिए बना है, सभी को अपनी कमियां का अवलोकन करना होगा और उसे दूर कर स्वयं को सुधार के पथ पर अग्रसित करना होगा, तभी यह पर्व मनाना सार्थक होगा।

कितने धर्मों को हमने अपने जीवन में ढाला ?

क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आक्रिन्चन्य और ब्रह्मचर्य, ये दस धर्म हैं पर्युषण के। अब यह बताओ कि हमने इनमें से कितने पर्वो को अपने जीवन में ढाला, क्या इनमें से किसी एक पर भी अपने जीवन को केंद्रित किया ? मुझे मालूम है कि हम मेरे सामने झूठ नहीं बोलते हो, इसलिये मेरे इस प्रश्न पर आपका उत्तर नकारात्मक ही होगा। जब आपके हृदय में धर्म का निवास ही नहीं हुआ तो ये दस धर्म पूजने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। अभी तक आशक्तियों के गढ़ को तोड़ा ही नहीं। निरुद्देश्य ही रह गया आपका

इस बार का भी पर्युषण पर्व। सब की सब विषयों में ही अशक्त बने रहे जबकि यह पर्व आध्यात्मिक साधना का है, छल, कपट, मोह-माया छोड़ने की हिम्मत ही नहीं जुटा सकें। बस, हर साल पर्युषण बढ़ते गये, संतानों की वृद्धि होती रही, एक के बाद एक अट्टालिकाएं खड़ी होती गई लेकिन अभी तक मन और हृदय की उच्च अट्टालिका खड़ी नहीं कर सकें। जो साधना भगवान श्रीमहावीर ने की,क्या तुम रंच मात्र भी उसके निकट पहुंचे या पहुंचने के बारे में विचार किया,नहीं न,तो फिर आपका इस बार का पर्युषण भी निरर्थक ही गया।

क्षमा मना ली तो फिर क्यों लौट रहा है कोधः-

जब हमने क्षमा मना ली तो दोबारा कोध क्यों आता है ? कई बार यह पर्व मनाने के बाद भी हमारे जीवन से दुर्भावनाएं कम क्यों नहीं हुई ? मुझे तो यही प्रतीत होता है कि हमारा सारा जीवन तनाव और विद्वेष में ही उलझे रहना चाहते हो, यदि ऐसा नहीं है तो हम इस महान पर्व के माध्यम से आत्मशांति एवं आत्मशुद्धि के पथ पर चलते। जिस हृदय में धर्म का वास होना चाहिये, वहां अभी भी अधर्म का राज है, जिस मन में शुद्धि का वास होना चाहिये वहां अभी भी लगाम प्रदूषण व्याप्त है। जब कोई आत्मा और अपने मन में झांकने की कोशिश नहीं करेगा, तब तक अपने जीवन में पर्युषण पर्वो की कितनी भी संख्या बढ़ा लो, लाभ होने वाला नहीं है, हां लोग अपने पड़ौसी या अपने रिश्तेदार से अच्छी प्रतिस्पर्द्धा कर सकते है कि उसने आठ उपवास रखे और हमने दस। अपने मन-मस्तिष्क में धर्म की प्रवाहना होने ही नहीं दी, तो पर्व और धर्म के नाम पर सिर्फ औपचारिकता के निर्वाहन में ही खुद को उलझाए हुए है लोग। क्या किसी ने यह विचार किया कि पिछले पर्युषण से लेकर इस बार के पर्युषण के अंतराल में मित्राता बढ़ाई या वैमनस्यता। कितने लोगों के प्रति आपके हृदय में भाईचारे का भाव उपजा और कितनों के प्रति दुराग्रह। सच लेकिन कड़वी बात तो यह है कि हमने विचारों के प्रदूषण को धोने के बारे में सोचा ही नहीं। जबकि प्रयास यह होना चाहिये कि कम से कम इस बार के पर्युषण पर तो हमारी मानसिकता और सोच में वैचारिक परिवर्तन आए और भगवान महावीर स्वामी की आत्म-साधना हमारे जीवन में साकार हो। प्रत्येक पर्व कोई न कोई संदेश देता है, हमें उस पर्व की उपरी चमक-दमक या आभा-मण्डल में न उलझकर उसमें छिपी मूल भावना और संदेश तक पहुंचना चाहिये और उसे आत्मसात कर न सिर्फ अपने जीवन बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिये।

अब तो पर्व की मूल भावना को कर लो आत्मसातः-

आपने मेरी अवज्ञा कभी नहीं की है। विश्वास के साथ कह रहा हूं कि इस बार भी नहीं करेंगे। इस बार के पर्युषण पर्व पर मैं आपसे एक चीज मांग रहा हूं कि अपने विचारों के प्रदूषण को धो लो, खुद को आत्मशुद्धि के पथ पर प्रशस्त करने का प्रयत्न करो। आपका प्रयत्न निष्फल नहीं जाएगा। दृढ़निश्चय के भाव से संकल्प ले लोगे तो आपकी आत्मा और मन-हृदय सभी कुछ स्वमेव शुद्ध होने लगेंगे, संक्रमण दूर होने लगेंगे, आपका मन निष्पाप हो जाएगा, अपने मन को साधना में लीन करो, व्यर्थ के संक्रमण स्वमेव ही छंट जाएंगे। तभी आपका इस बार का पर्युषण पर्व मनाना वाकई में सार्थक होगा। वरना जीवन व्यतीत हो जाएगा, हर वर्ष पर्युषण पर्व आता रहेगा, हम हर वर्ष धर्म की शाब्दिक एवं औपचारिक आराधना करते रहोगे लेकिन जब तक हम इस पर्व की मूल भावना को अपने दिल से आत्मसात नहीं करोगे तब तक कोई लाभ होने वाला नहीं है। मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है कि इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार के पर्युषण पर्व पर आप सभी को मेरा यही संदेश है कि आत्मसाधना करें, मन और आत्मा की शुद्धि करें, वैचारिक प्रदूषण से मुक्तिपा लें और भगवान श्रीमहावीर स्वामी की तरह अपने मन-हृदय और आत्मा को विराट स्वरुप की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न करें।आप ऐसा ही करोगे न...!

आम

पेड़ का मालिक पके आमों की खोजबीन करने वृक्ष पर चढ़ा भी, पर आम पत्तों की झुरमुट में ऐसा छिपा कि हाथ आया ही नहीं। दूसरे दिन उस आम ने देखा कि उसके देखा कि- उसके सब पड़ोसी जा चुके, उसका अकेले ही रहने का मोह नहीं टूटा था। अब मित्रों की विरह-व्यथा और सताने लगी। आम कभी तो सोचता नीचे कूद जाऊं और अपने मित्रों से जा मिलूं फिर उसे मोह अपनी और खींचता, आम इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

संशय का यही कीड़ा धीरे-धीरे फल को खाने लगा और एक दिन उसका सारा रस समाप्त हो गया। मात्र सूखी बोंड़ी नर-कंकाल के समान पेड़ में लगी रही।

जैन रसोई पद्धति का वैज्ञानिक महत्व

बीसवीं शती जब प्रारंभ हुई तो विज्ञान ने असीम वस्तुओं व संभावनाओं को हमारे सामने खोला जिसने हमें चकाचौंध कर दिया और भोजन पद्धति में स्वच्छन्द वस्तुओं और शैलियों का समावेश कर दिया। अभक्ष्य वस्तुओं की एक लम्बी लिस्ट हमारे सामने रख दी तथा प्रत्येक रसोईघर रात्रि में चलने वाला मुर्दा घर बन गया फलतः परिवारों में बढ़ रहा है-बीमार एवं अर्द्धजीव समूह का प्रतिशत।

वैज्ञानिकों ने इस विभीषिका को अब समझा है। फास्ट फूड, प्रिजर्वफूड, रात्रि भोजन, मांसाहार आदि के दुष्परिणामों को समझना प्रारंभ किया है। जबकि हमारे श्रमण चिंतकों ने जीव की प्रयोगशाला में पहले ही समझ लिया था इसलिए जैनागम में रसोई के लिये चार प्रमुख शर्ते निर्धारित हैं-

1- द्रव्य दृष्टिः- अन्न जल, वनस्पति की शुद्धि।

2- क्षेत्रशुद्धिः- जहां भोजन बनाया जाता है उस स्थान को शुद्ध रखना।

3- काल शुद्धि :- इसके अंतर्गत रात्रि भोजन व अमर्यादित भोजन नहीं करना।

4- मन शुद्धिः- हमारा मन, प्रसन्न व विकार रहित हो।

ये चारों प्रकार की शुद्धियां बताने का उद्देश्य है शुद्धता, प्रासुकता, संतुलन व निरामीष भोजन।

आज समय की कसौटी पर यह सिद्ध हो गया है कि रात्रि में भोजन न देने वाली माँ बहुत भारी वैज्ञानिक होती है। अनछना पानी पीने वाला जैन समाज एक्वागार्ड के सिद्धांत से 5000 वर्ष पूर्व भी परिचित था।

जैन रसोई का मूल आधार है श्रावक एवं श्राविका गृहस्थ दशा में विवेकपूर्ण जीवन बिताने वाला व्यक्ति श्रावक होताा है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि श्रावक न केवल सशक्त शरीर का स्वामी होता है वरन् अपनी परम्परा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ाने वाला परिवार का मार्गदर्शक होता है, अपने परिवार के अलावा श्रावक का मुख्य दायित्व श्रमण चिन्तक साधुओं के लिये आहार उपलब्ध कराना है। जैनाचार में आहार पर गहराई से विचार हुआ। उसके श्रावक/श्रमण दोनों के आहार की विवेचना की है।

जैन चिंतन ने भोजनशाला को एक प्रयोगशाला के रुप में वर्णित किया है। जिसके उपकरण व कर्मी सभी नियमों से बंधे है, जिनका लक्ष्य ऐसे भोजन का निर्माण करना है जो स्वास्थ्यवर्धक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुकूल हो, मन व मस्तिष्क को चैतन्य रखने में सक्षम हो...!

जैन रसोई के भेद विज्ञान को समझने के लिये हम प्रवेश करते हैं, हमारे चौके में जिसकी डायरेक्टर है जैसे विदुषी गृहणी।

हमारी दैनिक क्रिया आरंभ होती है, पानी छानने की क्रिया से। बासी पानी को एक मटके से दूसरे मटके में छानना, उसके बाद गलने को एक पात्र में धोना तथा जीवाणी को उचित स्थान पर पहुंचाना कितना सूक्ष्म विवेक है यह अहिंसा का, जो शायद ही अन्य समाज में होता होगा। इस प्रक्रिया के फलस्वरुप घर के प्रत्येक सदस्य को मिलता है, शुद्ध छना पानी, जिसकी आवश्यकता आज अधिक हो गई है। पानी छानकर पीना न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से स्वास्थ्य व स्वच्छता के अनुरुप है अपितु समूची सृष्टि के प्रति करुणा व मैत्री का संदेश है। वाशिंगटन के वर्ल्ड वाच संस्थान ने साफ पानी को लम्बी उम्र का कारण माना है। डॉ. जगदीशचन्द्र बसु ने एक बूंद जल में 36450 बैक्टीरिया को साबित किया है। अतः पानी छानना जो कि जैन जीवनाचार का एक अंग है वहीं वैज्ञानिक भी है।

हम लोगों को वंश परम्परा से यह शिक्षा मिली है कि चौक में झाड़ू लगाये बिना तथा चूल्हे को कपड़े से झाड़कर साफ किये बिना चूल्हा जला देना अमंगल का सूचक है। चूल्हे को झाड़ देने से रात्रि में आ बैठे जीव उसके जलने से पूर्व ही सुरक्षापूर्वक निकल जाते हैं यद्यपि आज घर-घर में गैस के चूल्हे प्रचलित है किंतु उनको झाड़ना भी उतना ही जरुरी है जितना पुराने चूल्हे को। गैस के चूल्हों में भी कई छोटी काकरोच रहती है जो उड़कर भोजन को विषैला बना देती है।

जैन चौके की लगाम सूरज के हाथ में है। सूरज की पहली किरण जैन किचन पर दस्तक देती है व अंतिम किरण उसकी चटखनी से ताला लगा देती है, किंतु वर्तमान में हमने इस परम्परा को खो दिया है। अतः फैमिली डॉक्टर हमारी अनिवार्यता बन गये है। जबकि हमारी प्राचीन संस्कृति में भी सूर्यास्त के पूर्व भोजन की परम्परा थी। आज वैज्ञानिक व हमारा आयुर्वेद भी स्वीकार करता है, रात्रि भोजन अहितकर है, सूरज की रोशनी में अनेक जीवाणु निकल नहीं पाते किन्तु रात में वे सक्रिय हो जाते है जो भोजन के साथ शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

वैज्ञानिक तर्क है कि जीवाणुओं की ऐसी प्रकृति है कि वे एक दिन निश्चित तापमान पर तेजी से बढ़ते हैं व संगठित हो जाते है। इसलिये किस खाद्य सामग्री को कब तक उपयोग करना यह मर्यादित करना नितांत आवश्यक है, इसी वैज्ञानिक आहार को ध्यान में रखकर हमारी आहार क्रिया निर्धारित की गई है। वर्तमान समय में फ्रिज के उपयोग ने बासी की परिभाषा ही बदल दी। जबकि यह भारत है जहां फ्रिज रहता है वह जगह वातानुकूलित नहीं होती है, हम तो एक ही फ्रिज में हरी तरकारी, दही, दूध, गूथा हुआ आटा, बची हुई सब्जी सभी रख देते हैं फलतः फ्रिज खोलना पड़ता है अतः गर्म हवा का प्रवेश होता रहता है जो कि जीवाणु की उत्पत्ति का कारण बनता है। अब वैज्ञानिक कहने लगे हैं लम्बे समय तक फ्रिज में रखी वस्तु में एक अन्य प्रकार के बैक्टीरिया का प्रजनन होने लगता है जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

खाना खाते समय हमारे पूर्वज बड़े विवेक के साथ खाते थे। द्विदल के साथ कच्चा दही नहीं खाया जाता था, कढ़ी बनाते समय दही को गर्म करके डाला जाता है। दही जमाने की भी एक विशेष प्रक्रिया है, जैनागम में निर्देश विधि से बनाया गया दही अर्थात् दूध में चाँदी का सिक्का, नारियल का छिलका, बादाम का टुकड़ा आदि डालकर बनाया गया दही खाने योग्य माना गया है। यह सच है कि खमीरीकरण की क्रिया एक कोशीय जीवाणुओं के द्वारा सम्पन्न होने वाली रसायनिक क्रिया है। किन्तु ये एक कोशिय जीवाणु वनस्पति जल, वायु आदि सभी जगह उपस्थिति रहते हैं। इडली, डोसा, रोटी बनाने के लिये गूंथा गया आटा इसी खमीरीकरण की प्रक्रिया के उदाहरण है जो सुपाच्य व निर्दोष माने गये है किन्तु यीस्ट के द्वारा होने वाला फर्मेन्टेशन जामन द्वारा जमाया गया दही खाने योग्य नहीं माना गया है। आज विज्ञान इस बात को प्रमाणिक रुप से सिद्ध कर रहा है दूध, दही, तेल, इमली आदि वस्तुएं एक साथ खाने से ये लार के साथ मिलकर एक विषैले बैक्टीरिया को जनम देते हैं जो विशेषकर चर्म रोग का कारण होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय योग एवं चिकित्सा संस्थान के निदेशक डॉ. एन.सी. अधिकारी का मानना है कि प्राचीन जैन रसोई और खानपान से शरीर ज्यादा स्वस्थ रहता है।

जैनागम में उदम्बर फल व जमीकन्द को खाने योग्य नहीं माना गया है। आलू, प्याज के प्रति अत्यधिक रुचि रखने वाली हमारी नई पीढ़ी द्वारा आलू, प्याज का त्याग क्यों ? आदि तर्क बार-बार किये जाते है। प्रो.आर.के.जैन ने भूमिगत वनस्पतियों को लेकर कुछ तथ्य हमें दिये है जो विचारणीय है। यदि हम जड़, तना तथा किसी कन्द को भोज्य पदार्थ के रुप में लेते हैं तो उस जाति के संपूर्ण पौधे का नाश होता है। एक मूली व गाजर के लिये संपूर्ण पौधे का नाश पर्यावरण व अहिंसा की दृष्टि से अनुचित है। सूर्य के प्रकाश के अभाव में प्रचुर मात्रा में सूक्ष्मजीव व उत्पत्ति इन भूमिगत वनस्पति में हो जाती है, इसका सेवन सूक्ष्म जीवों का घात है। उदम्बर, पीपल, बरगद, अंजीर, गूलर आदि के सम्बन्ध में भी वनस्पति विद्वान का तर्क है कि उनमें परायण सूक्ष्म जीवों के द्वारा होता है। आयुर्वेद में इन्हें जन्तुफल भी कहा है। ये उदम्बर फल जीवाणुओं के प्रसूति कक्ष के समान है जहां मादा कीट अपने अण्डों को जन्म देती है। जैनागम में इन सभी बाईस फलों को अभक्ष्य माना है जो कि सेवन योग्य नहीं है।

जैन रसोई में भोजन की शुद्धि का प्रयोजन अथवा सूक्ष्म जीवों से भोजन की रक्षा तीन दृष्टियों से उपयोगी है- अहिंसा की दृष्टि से,स्वास्थ्य की दृष्टि से,साधना की दृष्टिसे। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान स्वाथ्य की दृष्टि से ही बैक्टीरिया से बचने के उपाय बताते हैं पर हम उसी सिद्धांत को साधना की दृष्टि ग्रहण करते हैं जिसमें स्वास्थ्य की रक्षा स्वतः ही हो जाती है।

भोजन संरक्षण का वैज्ञानिक आधारः-

जैन चौके में जीवाणुओं की उत्पत्ति, नियंत्रण के उपाय विज्ञान सम्मत है। प्रशीतन, उष्मीकरण, पाश्चुरीकरण संरक्षण आदि अनायस ही हमारे चौके में लागू होते हैं। वर्तमान में जहां हम कीटनाशी दवाईयों का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहे है जो कि स्वास्थ्य व पर्यावरण दोनों के लिए हानिकारक है।

हमारे बुजुर्ग खाद्य पदार्थ के संरक्षण के लिए जिन चीजों का इस्तेमाल करते थे वे हर दृष्टिकोण से उपयोगी व लाभदायक है यथा अनाज की सुरक्षा के लिए अरंडी का तेल व नीम की पत्तियों का उपयोग किया जाता था जो कि आज हमारे लिये गुजरे जमाने की बात हो गई। जहां इन करिश्माई उत्पादों को हम भूलते जा रहे हैं वहां पाश्चात्य देशों ने इनका भरपूर उपयोग प्रारंभ कर दिया। अमेरिका ने हमारी जड़ी बूटियों को क्रमशः पेटेन्ट करा लिया है।

संक्षेप में जैन दर्शन में भोजन पद्धति मन व चेतना को प्रभावित करने वाली पद्धति है जो जीवन को तामसिकता से दूर रखाकर शारीरिक व मानसिक रुप से संतुलित रखकर निर्बाधगति से जीवन को अपनी चरमावस्था तक पहुंचाता है। यहां यह विचारणीय है, वर्तमान में वैज्ञानिक निर्णय सदैव बदलते रहते हैं, कल जो दवाई अमोघशस्त्र थी आज यह घातक सिद्ध हो रही है। वहीं हमारे आचार्यो द्वारा दी थी जानेवाली पद्धति अपरिवर्तनीय है, जो आज भी हमारे व भविष्य की पीढ़ी के लिए आवश्यक है।

हमारे रसोईघर की वैज्ञानिकता तभी कारगर रह सकती है जब भोजन ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों की आस्था इस पद्धति पर हो, सारे परिवार की सोच इसके साथ जुड़े तभी अपेक्षित सफलता मिलेगी। अन्यथा हमारी विदुषी गृहणी तो परम्परा का निर्वाह करते हुए 6 बजे किचन का दरवाजा बन्द कर देगी। किन्तु युवा पीढ़ी आधुनिकता का बहाना लेकर उस परम्परा को तोड़कर स्वयं के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। अतः ***सुखद स्वस्थ जीवन शैली के लिये जैन भोजन विज्ञान आवश्यक है। क्योंकि आहार का विचार और कर्म से गहरा संबंध है।***

विचार और कर्मो के परिणामों पर व्यक्तिअपना वर्तमान जीवन जीता है, भविष्य को सत्कार करता है और इन दोनों के निर्वहन के लिये अतीत से रोशनी लेता है।

सव्व कला धम्मकला जिणाई

मैंने जीवन में एक दृश्य देखा-

नगर में हजारों दर्शक-उत्सुकता से रंगभूमि की ओर जा रहे थे। नृत्यकला का आयोजन था। दर्शक अधीर हो रहे थे। नृत्यांगना के भाव विभोर नृत्य को देखने-उस कला निपुण नवयौवना की भाव भंगिमा को देखने।

मधुर वाद्य बज रहे थे-उनकी कला संगीत मर्मज्ञों को मस्त कर रही थी। उनको तान-उनके राग-उनके आलाप-आरोह अवरोह से जनमन रंजित था। वहां चित्रकला प्रदर्शनी भी थी। दुर्लभ चित्र थे। चित्रकार की तूलिका का जादू मानव मन में हलचल उत्पन्न कर रहा था। जिज्ञासा वश दर्शक नाम जानना चाहते थे, उनके दर्शन कर आत्म तुष्टि प्राप्त करना चाहते थे। इस प्रकार वहां अनेक कलाओं का आयोजन था। आकर्षित जनसमूह ने इन्हें देखा-प्रशंसा की। परन्तु कुछ घंटों बाद भीड़ कम होने लगी। दर्शक ऊबने लगे। आते समय जो उत्सुकता थी-जाते समय धीरे-धीरे कम होने लगी। उदासीनता में परिणित होने लगी। वहां मैं भी एक दर्शक था। जनता के इस मानसिक परिवर्तन को देख मैं गहरे चिंतन में डूब गया। मन ने प्रश्न किया-

''भौतिक कलाओं का प्रभाव क्षणिक क्यों है ?''

उत्तर मिला- इस कला की पृष्ठभूमि में केवल भावों के बुलबुले हैं-गहराई नहीं है-स्थायित्व नहीं है। पानी में दिखाई देने वाला प्रतिबिम्ब जिस प्रकार हल्की हवा के एक झोंके से हिल उठता है- उस प्रकार जीवन के आदर्शो का नहीं, क्यों कि उसमें स्थायित्व है।

आध्यात्मिकता के सम्पुट से निर्मित कला विश्व की साहित्य की निधि होती है-उसका प्रभाव भी अमिट होता है और उसको समय का अंतराल प्रभावहीन नहीं करता है। वहीं अंतर जो अमावस्या एवं पूर्णमासी की रात्रि में होता है। वहीं अंतर अध्यात्म संपुट कला एवं भौतिक कला में होता है।

भौतिक कलाएं आत्मिक आनन्द को स्थायित्व-चिरन्तनता प्रदान नहीं करती। इसलिये तो-आध्यात्मिक कलाओं के सम्राट, परम कारुणिक श्रमण भगवंतों के मुख से निसृत ज्ञान-गंगा, मानव-समाज को आप्लावित कर देती है क्योंकि उसमें जीवन के चिरन्तन सत्य है।

आचारंग सूत्र में कहा है- **''सव्वे सराणिय टट्ंति तक्का जत्थ न-विज्जति मति तत्थ न गहिता।''**

(सत्य वहां है-जहां से सब शब्द लौट आते हैं-जहां तर्क नहीं जा सकती और न जहां बुद्धि की पहुंच है।)

वही कला-शाश्वत है-कल्याणकारी है। उसी को हृदय में हम धारण करें-सच्चे आनन्द की अनुभूति करें।

पर्वाधिराज का दिव्य संदेश

भाद्रपद के सुहावने दिन, जलप्लावित पृथ्वी, धनी वनस्पति हरियाली से संकुल वन-उपवन, शस्य से भरे खेत, मेघों से आच्छन्न आकाश, प्राणीमात्र सुखद भावी वर्ष के आनन्द से विभोर हो जाता है।

जनसमुदाय के लिये श्रावण-भाद्रपद भारतीय संस्कृति में धर्माराधन के मास हैं। इसी परम्परा में वीतराग वाणी के श्रवण की, धर्म की आराधना की वेला-स्वरूप पर्युषण के दिनों का आगमन होता है। श्रमण भगवंतों की जिनवाणी तिमिराच्छन्न मन के कलुष को धोने का कार्य करती है। वर्षावास के दिनों में जैन शासन के प्रभावक सन्त-मुनिराज इसमें चार चांद लगा देते हैं।

जिज्ञासु श्रावक शास्त्रों का श्रवण कर श्रद्धा, भक्ति, त्याग, वैराग्य भाव की ओर बढ़ते हैं और उनका अन्तस्थल ज्ञानदिवाकर से उद्भासित हो उठता है। चतुर्विध संग आनन्द उल्लास के साथ पर्युषण पर्व को मनाता है। उसका स्वागत करता है-''पधारो पर्वाधिराज, आपका हार्दिक स्वागत।''

जनमानस धन्य होता है- कृतपुण्य होता है- नवजीवन की ऊषा खिल उठती है, सभी आराधना में मग्न हो जाते हैं।

ऐसा कौन अभागा चकोर होगा जो चन्द्रकिरणों को देख हर्षमग्न नहीं होगा? ऐसी हतभागिनी कौन कोयल होगी जो बसंत अगमन पर कूक न उठती हो? ऐसी कौन अभागिनी माता होगी जो वर्षों से बिछड़े पुत्र को देख पुलकित न हो उठती होगी? इसी प्रकार पर्व पर्युषण के आगमन पर प्रत्येक साधक का रोम रोम पुलकित हो उठता है।

श्रमण भगवंतों का दिव्य संदेश निर्ग्रन्थ मुनिराजों को वाणी में गूंज उठता है-

''श्रद्धालु श्रावकों! सावधान हो जाओ! ३६० दिन के वर्ष में केवल ८ दिन के लिये दीर्घकाल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अतः सचेत हो जाओ।

तुम्हारी निर्मल चेतना को अनादिकालीन विषय-कषायों के तत्वों ने मलिन कर दिया है।

तुम्हारे ज्ञानरूपी तेजस्वी सूर्य को कर्मसमूहों के मेघों ने ढंक रखा है। तुम्हारा विवेकशशि मिथ्यात्व रूपी राहु से ग्रसित है। अतः अनन्त वीर्य से युक्त आत्मदेव को जागृत करो।

✻ कर्मों का क्षय जन्म-जन्म के पुण्यों से होता है, यह हर ऋतु का राजा है, जो हर ऋतु में बोता है, खोता है, जो समय जगत में वह रहता रोता, सोता रहता जो जीवन में वह रहता जीवन खोता।

माँ *एक गॉव में एक युवक अपनी बूढ़ी मॉ के साथ रहता था। वह दिन-रात अपनी बूढ़ी मॉ की सेवा में लगा रहता था। मॉ की सेवा के बाद जो समय बचता है, उस समय में वह भगवान की भक्ति करकर गुजारा करते थे।*

एक दिन जब उसकी मॉ मृत्यु शैया पर पड़ी थी, वह दर्द से कराहती हुई अपनी मॉ के पैर दबा रहा था। माँ का चेहरा बता रहा था, थकी-मांदी, मृत्यु के करीब पहुंची उसकी माँ को पुत्र-सेवा से बड़ा आराम मिल रहा था।

भगवान ने जब यह देखा तो वे भी अपने आपको रोक नहीं पाए, वे उसकी भक्ति से तो प्रसन्न थे ही, उसकी मातृ-सेवा के भी कायल थे, वह तुरन्त भक्त के घर में अवतरित हो गये। भक्त को कुछ नहीं पता चला क्योंकि वह तो अपनी मॉ की सेवा में तल्लीन था। भगवान पहले तो वहां खड़े रहे फिर धीरे से उसके कंधे पर हाथ रखा और बोले- भक्त, देखो मैं आया हूं।

भक्त उसी सेवाभाव से अपनी मॉ के पैर दबाते-दबाते बोला- अभी थोड़ी देर में आना, देखते नहीं, मैं अपनी मॉ की सेवा कर रहा हूं। भगवान भक्त के ये वचन सुनकर अचंभित हो, ठगे से रह गये। उनसे वहां से जाया भी नहीं गया, वे वहीं खड़े रहे।

भक्त ने जब यह देखा तो उसने धीरे से अपना आसन सरका दिया और कहा-आप आराम से इस पर बैठ जाओ, आप मेरे और मेरी मॉ के बीच बाधा मत बनो। मुझे मेरी मॉ की सेवा करते रहने दो। भगवान ने जब यह सुना तो उसके पास आसन पर बैठने के सिवा कोई चारा नहीं था। भक्त था कि उसे मॉ के अलावा कुछ नजर ही नहीं आता था और भगवान थे कि यह देखकर उनसे वहां से जाया भी नहीं जाता था।

इसलिये तो कहा जाता है कि मॉ-बाप की सेवा करना भी ईश्वर-भक्ति के ही समान है।

क्षमा की रंगोली हो घरों में, पर्व क्षमा का मनें घरों में....
क्षमा मांगे क्षमा करें, क्षमा बसायें हम दिलों में....

जैनाचार्य श्री विजय राजतिलकसूरीश्वरजी

भारतीय विचार धारा के अनुसार हर जीव अपने पूर्व भवों में संचित पाप या पुण्य का खाता साथ में लाता है। ऐसा ही एक प्रसंग के बारे में हम आज जानना चाहेंगे।

सन् 1922 में तेलंगाणा प्रांत के महबूबनगर जिले के मुक्ताल तालुका के कुणसी गांव में श्री हनुमन्तप्पाजी एवं श्रीमती तिम्मप्पा के परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। बालक का नाम सायबन्ना रखा गया। इस बालक को शिक्षा के लिये पाठशाला में प्रवेश दिलवाया लेकिन बालक की शिक्षा के प्रति विशेष रूचि न होने से चौथी कक्षा के बाद पढ़ाई छुड़वाकर श्री हनुमन्तप्पाजी ने अपने पुत्र को एक मित्र के पास काम सिखने के लिये रखा। यहां सायबन्ना ने सिलाई का काम सिखा। 20 वर्ष की उम्र में उनका विवाह अम्मंप्पा से हुआ और जीवन की शुरूआत हुई।

परिवार पोषण के लिये हुबली बल्लारी, बेंगलूर आदि में घूमते हुए वे कर्नूल पहुंचे। कर्नूल में वे शाह मिश्रीमलजी दयाचन्दजी के संपर्क में आये और उनकी रेडीमेड कपड़ों की दुकान में सेल्समेन कार्य करना शुरू किया। शा मिश्रीमलजी की जीवन शैली से सायबन्ना प्रभावित हुए और उनके जीवन परिवर्तन की शुरूआत हुई। उन्होंने मांसाहार, शराब, जुआ आदि का त्याग कर दिया।

कुछ समय के बाद शाह मिश्रीमलजी की अनुमति से रोड़ पर ही कपड़े बेचने का व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे प्रगति करते हुए कर्नूल नगर के मेन बाजार के जैन मार्केट में अपनी स्वयं की दुकान कर ली और धंधे में प्रगति करते हुए, बाजार में अपना स्थान बना लिया। इस समय आपकी उम्र 50 वर्ष की थी और आप पुण्य, पाप, सुकृत धर्म आदि से संपूर्णतया अनजान थे।

एक दिन बाजार में आये सायबन्ना ने दुकानें बंद देखी और अपने मित्र पारसमलजी से प्रेरित कर्नूल में चार्तुमास के लिये पधारे हुए मुनिराज श्री कंचनविजयजी के व्याख्यान में गये। बस, उस एक व्याख्यान ने ही सायबन्ना की विचारधारा में परिवर्तन ला दिया और दूसरे दिन चतुर्दशी को चौविहार उपवास किया। संयम की तरफ बढ़ने का मन बना लिया और मुनिराज श्री कंचनविजयजी के संपर्क से अपनी संयम भावना को दृढ़ करने लगे। जैन धर्म का प्राथमिक ज्ञान बेंगलूर नगर की श्री लब्धिसूरी जैन पाठशाला में श्री तिलकगुरूजी से प्राप्त किया। चार्तुमास पूर्णाहुति के बाद मुनि श्री कंचनविजयजी के साथ विहार करते हुए गुंटुर विजयवाड़ा आदि क्षेत्र में पधारे। आपकी दीक्षा अमरावती तीर्थ में सम्पन्न हुई और आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ हुई। आपका नाम मुनिश्री राजतिलक विजयजी घोषित किया गया।

विशाखापट्टणम होते हुए श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ की यात्रा की और कलकत्ता नगर में अपना प्रथम चार्तुमास किया। वहां से बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान प्रांत में विहार करते हुए गुजरात पधारे। वडील गुरूदेवों के प्रति अटूट श्रद्धा, ज्ञानीजनों के साथ सत्संग, निरंतर शास्त्रों का अध्ययन एवं धर्म प्रबोध आदि इनकी उत्तम गुण संपदा की विशेषताएं है।

संयम सम्राट आचार्य श्री मंगलप्रभ सूरीश्वरजी, आचार्यश्री अरिहंतसिद्ध सूरीश्वरजी जैसे महान आचार्यों से इन्होंने अपने संयम जीवन के लिये मार्गदर्शन प्राप्त किये। आचार्यश्री हेमप्रभ सूरीश्वरजी से आपने ''जीव विचार'',''नवपद'' जैसे ग्रंथों की गहराई के साथ अध्ययन किया। फालना के पंडित श्री कनकराजजी, शिवगंज के श्री जगदीशप्रसादजी, श्री गोविन्दराजजी जैसे विद्वानों से आपने जैन शास्त्र एवं संस्कृत भाषा का गहरा ज्ञान प्राप्त किया।

जालोर जिले के सांथू गांव में मंदिरजी निर्माण का कार्य 22 वर्षों से रूका हुआ था उसे पुनः शुरू करवाकर प्रतिष्ठा करवाई। बाला गांव में सात परिवारों को श्रद्धावंत बनाकर मंदिरजी की प्रतिष्ठा करवाई।

जोधपुर नगर के भेरूबाग धर्मशाला के रूके हुए कार्य को पुनः शुरू करवाकर 45 विशाल कमरोंवाली धर्मशाला का कार्य पूर्ण करवाया। आहोर नगर में 9 वर्षों से बीमार साध्वीजी श्री गौरवपूर्णा श्रीजी की बिमारी को एक घंटे के अल्प समय में ठीक कर दिया।

18 भाषाओं के ज्ञाता इस महात्मा ने 40 वर्ष बाद पुनः दक्षिण भारत की तरफ विहार किया और सन् 2014 का चार्तुमास विजयवाड़ा टू टाउन संघ में सम्पन्न किया। श्री अमरावती तीर्थ में भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। सन् 2015 का चार्तुमास रायचूर नगर में सम्पन्न किया और मंदिरजी में दोष निवारण के लिये मार्गदर्शन प्रदान प्रदान किया। वहां से महावीर धाम (कर्नूल) का छःरिपालित संघ का भी आयोजन हुआ। राजमहेन्द्रवरम से पेदमीरम तीर्थ का भव्य छःरिपालित संघ का आयोजन भी आपश्री की निश्रा में हुआ। चैत्र मास की नवपदजी की ओलीजी की आराधना आचंटा तीर्थ में करवाई और विजयवाड़ा में कौस्तुबा निवास प्रांगण में श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी जिनालय का भूमि पूजन से प्रतिष्ठा तक का संपूर्ण कार्य आपश्री के आर्शीवाद से और आपश्री की निश्रा में ही 19 दिनों में पूरा हो गया। प्रतिष्ठा के बाद 2 मई 2016 को विहार किया और हैदराबाद, सिकंदराबाद रायचूर होते हुए, स्वयं के जन्म गांव कुणसी में बन रहे विहार धाम में गृह मंदिरजी प्रतिष्ठा सम्पन्न करवा कर सन् 2016 का चार्तुमास अपनी वैराग्य भूमि कर्नूल नगर में सम्पन्न किया।

क्षमापर्व : खुद से भी मांगे माफी

क्षमापर्व, जो राग-द्वेष, अहंकार से भरे इस संसार में अपने-अपने हितों और अहंकारों की गठरी को दूर करने का मौका हमें देता है । **क्षमा शब्द मानवीय जीवन की आधारशिला है जिसके जीवन में क्षमा है, वहीं महानता को प्राप्त कर सकता है ।** भारत की प्राचीन श्रमण संस्कृति की अत्यन्त महत्वपूर्ण जिन परम्परा ने तो क्षमा को पर्व के रुप में ही प्रचलित किया है। जैनों के प्रमुखतम पर्व में 'पर्युषण' है। इसे 'क्षमापर्व' भी कहते हैं। 'पर्युषण' पर्व के दिन सभी जैनधर्मावलंबी धार्मिक स्थल पर इकट्ठा होकर अपने जान-पहचानेवाले और अनजान बंधुओं से भी क्षमा मांगते हैं। यह पर्व हमें यह शिक्षा देता है कि अगर आपकी भावना अच्छी है तो दैनिक व्यवहार में होनेवाली छोटी-मोटी त्रुटियों को अनदेखा करें और उससे सीख लेकर फिर कोई नई गलती न करने की प्रेरणा देता है। दिल से मांगी गई क्षमा हमें सज्जनता और सौम्यता के रास्ते पर ले जाती है। **आइए इस 'पर्युषण' पर्व पर हम अपने मन में क्षमा भाव का दीपक जलाएं उसे कभी बुझने न दें ।** ताकि क्षमा का मार्ग अपनाते हुए धर्म के रास्ते पर चल सकें। कहते हैं माफी मांगने से बड़ा माफ करने वाला होता है। अतः हम दोनों ही गुण स्वयं में विकसित करें। कषाय के आवेग में व्यक्ति विचार शून्य हो जाता है और हिताहित का विवेक खोकर कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। लकड़ी में लगने वाली आग जैसे दूसरों को जलाती ही है, पर स्वयं लकड़ी को भी जलाती है। इसी तरह क्रोध कषाय को समझ पर विजय पा लेना ही क्षमा धर्म है। हम जिस समाज में, जिस मोहल्ले, जिस स्थान पर रहते हैं वहां लड़ाई-झगड़े, मनमुटाव होते रहते हैं। लेकिन उसका मतलब यह कतई नहीं निकलता है कि आप घर के, आसपास के सदस्यों, रिश्तेदारों का सम्मान करना ही भूल जाए। दिन-रात होनेवाली गलतियों से सबक लेने के लिए ही क्षमावाणी पर्व एक ऐसा अवसर होता है जब हम क्षमा और प्रेम की सीढ़ी चढ़कर मन में प्यार, शांति, सम्मान और क्षमा का भाव रखकर अपनी भूलों का प्रायश्चित कर सकते हैं। अपने से जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिये खुद को क्षमा करना और दूसरों के प्रति भी इसी भाव को रखना इस पर्व का महत्व है। 'पर्युषण' पर्व हमारी वैमनसता, कुलषता बैर-दुश्मनी एवं आपस की तमाम प्रकार की टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहाने का नाम हैं, हम अपनी कषायों को छोड़ें, अपने बैरों की गांठों को खोलें, बुराईयों को समाप्त करें, बदले प्रतिशोध की भावना को नष्ट करें, नफरत-घृणा, द्वेष बंद करें, आपसी झगड़ें, कलह को छोड़ें। यह पर्व यह हमें ज्ञात कराता है कि हम अपने में सुधार का प्रयास सदैव जारी रखें, स्वयं की अच्छाईयों व अच्छे कार्यो को प्रोत्साहित करके ऐसी ही सकारात्मक सोच दूसरों के प्रति भी रखते हुए समता और संयम का भाव अपने जीवन में उतार कर सभी को एक नजरिए से देखने की प्रेरणा देता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की उक्ति वास्तव में क्षमा पर्व जैसे आयोजनों में चरितार्थ होते दिखती है । 'पर्युषण' पर्व हम **''आत्मन्-प्रतिक्लानि परेषां न समाचरे''** की शिक्षा प्रदान करता है। 'पर्युषण' के पावन पर्व पर **''सत्वेषुमैत्री''** और मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे'' पंक्तियों को चरितार्थ होते देखा जा सकता है। हमें यह पर्व सद्भावना का संदेश देता है। यह पर्व **''सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु-निरामया''** की भावना भाने की प्रेरणा प्रदात्य करता है। भूल को स्वीकार करें और उसे सुधारने का प्रयत्न करें। सभी के प्रिय बनने के लिये दूसरों की निंदा करना बंद करें। क्षमा तो आत्मा का पर्व होता है। क्षमा मन, वचन और काया से होती है। तीर्थंकरों ने संपूर्ण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सूत्र दिया है-**खम्मामि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती ने सव्वभूदेसु, वेरं मज्झम प केणावि ।** अर्थात् मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूं। सभी जीव मुझे भी क्षमा करें। मेरी सभी जीवों से मैत्री है। किसी के साथ मेरा कोई वैर भाव नहीं है।

दीपक जल रहा था, घृत चुकने को आया। लौ क्षीण हो चली । वायु के झोंकों ने देखा कि अब दीपक पर विजय पाना आसान है, तो वे वृन्द-वृन्द मिलकर तेज आक्रमण करने लगे। अंधकार नीचे दबा पड़ा था, अट्टहास कर हंसा और बोला-"दीपक अब तो तुम्हारा अन्त आ गया है । अब कुछ ही देर में यहां हमारा साम्राज्य होगा । "दीपक मुस्कराया और बोला- "बन्धु यह देखना विधाता का काम है । मेरा ध्येय है-प्रकाश के लिये निरंतर जलना, सो अब अन्त समय उससे विमुख क्यों होऊँ ।" यह कहकर वह एक बार इतने वेग से जला कि यहां का संपूर्ण अंधकार सिमटकर रह गया, भले ही दूसरे क्षण दीपक का अस्तित्व स्वयं भी शेष न रहा हो ।

भीतर की प्यास पानी से नहीं बुझेगी

समाज में जो पैसे से, पद से बड़े उनकी प्यास बुझी नहीं, बल्कि और ज्यादा बढ़ गई। दिन भर में सिर्फ रोटी के लिये कमाने वाला एक दिहाड़ी मजदूर शाम को ढाई सो-तीन सौ रुपये में संतोष कर लेता है, किंतु पैतीस-चालीस हजार रुपये की मोटी तनख्वाह पाने वाले बड़ी कंपनी के अधिकारी या मैनेजर को अपने वेतन से संतोष नहीं और अतिरिक्त कमाई के लिये वह रिश्वत की जुगाड़ करता है, यह तन की नहीं, मन की प्यास है, जिसे पैसे से बुझाने की असफल कोशिश की जा रही है। यह प्यास पैसे से नहीं बुझेगी, बल्कि और ज्यादा भड़केगी। **पदार्थ में भीतर की प्यास को शांत करने की क्षमता नहीं है, इस बात को समझ लेने की जरुरत है।**

भीतर से पैदा हुई प्यास को भीतर से ही प्रयत्न कर बुझाया जा सकता है, यह बाहरी प्रयत्न से बुझेगी नहीं। भीतर का प्रयत्न है.... आत्मा का अनुभव, चेतना का अनुभव, आज इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है।

बहुत प्रयत्न हुए कि धर्म को समाप्त कर दिया जाए। साम्यवादी विचारधारा ने धर्म को एक अवरोध माना, उसे अफीम की गोली कहा, जो आदमी को क्लीव और कायर बनाती है। हमने ऐसे बहुत से लोगों को देखा, जो बुद्धिवादी कहलाते थे। बुद्धिवादी संघ बनाया गया, जिसने जोर-शोर से यह प्रचारित किया कि धर्म एक भ्रांति है, ढकोसला है, पाखंड है, उसे समाप्त कर दिया जाना चाहिये। लेकिन मैंने देखा कि धर्म समाप्त नहीं हुआ, उसको समाप्त करने का प्रयत्न करने वाले जरुर समाप्त हो गए। मैंने कितने ही नास्तिकों को देखा,जो धर्म को फूटी आंख भी देखना नहीं चाहते थे, जीवन भर धर्म और धार्मिकों की निंदा की, किन्तु मरते समय ऐसी भावना जगी उनकी कि उन्होंने इच्छा प्रकट की.... मुझे धर्म सुनाया जाए।

सत्य दो तरह का होता है.... सामयिक और शाश्वत। शाश्वत सत्य को कभी मिटाया और झुठलाया नहीं जा सकता। जबकि सामयिक सत्य बदलता रहता है, उसे अपनी इच्छानुसार मिटाया और बदला जा सकता है। सिन्धु घाटी की सभ्यता बताती है कि शदाब्दी पूर्व कहां कितने नगर थे और कितना विकास हुआ था। लेकिन कालान्तर में सब समाप्त हो गए, क्योंकि वे सामयिक थे, शाश्वत नहीं।

आत्मा की चाह शाश्वत है, जो कभी मिटती नहीं, वे थोड़े से संतुष्ट नहीं होती। एक मार्मिक कथा है....

✱ शिल्पा बाफना, दिल्ली

एक गरीब आदमी भूखा-प्यासा घूमता हुआ जंगल की ओर गया। वहां उसे एक कुटिया दिखाई दी। वहां जाकर देखा तो पाया कि वहां एक बाबा बैठा हुआ है। झोपड़ी में बैठे बाबा से उसने याचना की- ''बाबा ! मुझे खाने को कुछ दो।'' साधु ने कहा-''अभी तो मेरे पास कुछ नहीं।'' याचक बोला- ''कुछ पैसे हों तो वही दे दो।''

साधु ने कहा- पैसे होते तो यहां जंगल में क्यों पड़ा रहता कहीं गांव या बस्ती में मकान बनवा लेता। हाँ, एक उपाय बताता हूं। यहां से थोड़ी दूर बहती हुई नदी तुमने देखी होगी। वहां चले जाओ। नदी के बायें तट पर एक साफ-सुथरा घाट बना है, वहां अक्सर मैं स्नान के लिए जाता हूं। तुम वहां जाओ। घाट के पास ही एक चमकीला पत्थर तुम्हें दिखाई देगा, उसे लेकर आओ।

भूखे आदमी के मन में एक बार आया.... बाबा शायद बला टालने के लिये मुझे यहां से भगाना चाहते है, लेकिन पत्थर लेकर आने की बात कहीं, तो उसे कुछ आशा दिखाई दी। वह गया और बाबा की बताई जगह से वह चमकीला पत्थर उठा लाया।

पत्थरों की चाकू आदमी को धोखे में डाल देती है। गरीब आदमी चमकीला पत्थर लेकर बाबा के पास आया, बोला- मैंने आपकी आज्ञा का पालन कर लिया। लीजिए अपना पत्थर और कहीं से मेरे लिये दो रोटी का इंतजाम कर दीजिए।

बाबा ने कहा- दो रोटी का नहीं, जीवन भर के लिये तुम्हारी अमीरी का इंतजाम कर दिया। पत्थर ले जाओ और जीवन भर ऐश करो।

गरीब आदमी बोला- बाबा, आप तो मेरा उपहास कर रहे हैं। इस पत्थर का मैं क्या करुं ?

बाबा ने कहा- यह सामान्य पत्थर नहीं। इसका चमत्कार देखना चाहते हो तो ऊंगली में पहनी यह लोहे की मँदरी इधर करो। इतना कहकर बाबा ने उसकी लोहे की मुद्रिका से उस पत्थर का स्पर्श करा दिया। मुद्रिका चमकीले पीतवर्ण के सोने में परिवर्तित हो गई। भूखे आदमी की भूख-प्यास एक झटके में गायब हो गई। वह आँखें फाड़े पत्थर का चमत्कार देखता रह गया। बाबा ने कहा- इसे ले जाओ और जब भी जरुरत हो, लोहे को छुआकर इससे सोना बना लिया करना। भूखा आदमी कृतकृत्य हो गया और बाबा के चरण स्पर्श कर चलता बना।

मील भर का रास्ता उसने तय किया होगा कि उसके विचारों में जबर्दस्ती उद्वेलन हुआ और उसके कदम शिथिल होते गए। विचारों में झंझावत-सा चलने लगा-अगर सब कुछ देने की सामर्थ्य इस पत्थर में होती तो बाबा लंगोटी लगाए झोंपड़े में क्यों पड़ा रहता ? जरुर इससे भी कोई बड़ी चीज है बाबा के पास। मुझे वहीं मांगनी चाहिये। कदम लगातार शिथिल होते जा रहे थे और अन्ततः स्थिति यह हो गई कि उसके कदम रुक गए और बाबा की कुटी की दिशा में फिर लौट पड़ा। कुछ ही देर में वह बाबा के सामने खड़ा था। बाबा ने उसे प्रश्नयित आँखों से देखा, जैसे पूछ रहे हों, अब क्या चाहिये तुम्हें ? बाबा ! मुझे यह नहीं चाहिये ? गरीब आदमी की आँखों में एक प्यास और उसके साथ एक अनोखी चमक भी थी।

लो और क्या चाहिये ? क्या इतना पर्याप्त नहीं है ? बाबा ने कहा। मुझे तो वह चीज चाहिये, जिसे पाकर आपने इस पारसमणि को नदी में फेंक दिया।

बाबा समझ गये कि असली प्यास अब जागी है, उन्होंने उसे ज्ञान का उपदेश देते हुए कहा- असली चीज है अनासक्ति का भाव। दुनिया की बड़ी से बड़ी चीज को आत्मा की तुलना में तृणवत ही समझना। अमूल्य है हमारी शुद्धात्मा, जिसके द्वारा हम अपने और दुनिया के सही स्वरुप का बोध कर सकते हैं।

हमारी आत्मा के भीतर एक अमिट और अनंत प्यास है। आदमी अपने स्वरुप को जानना चाहता है, अपने स्वरुप का संबोध करना चाहता है और उसका साक्षात्कार करना चाहता है। अगर वह चाह, यह प्यास और तड़प न होती तो वह सब प्रकार के साधन और सहारों से हीन गरीब आदमी पारस पत्थर लौटाने की हिमाकत कभी न करता। लोग तो दस-बीस रुपये पर भी अपना ईमान खो देते हैं। पारसमणि को त्यागने की भला कौन मूर्खता करेगा ? **लेकिन वह आदमी पारसमणि नहीं, दुनिया की बड़ी से बड़ी निधि को भी त्याग देगा, जिसे आत्मा के सही स्वरुप का बोध हो गया या जिसे पदार्थ की निरर्थकता समझ में आ गई।**

यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है और सबको इस सच्चाई का बोध करना चाहिये कि आत्मा का साक्षात्कार हो जाने के बाद तीनों लोकों का साम्राज्य भी आदमी के लिये तृणवत है। इतिहास के पन्नों में ऐसे आख्यान और घटनाएं भरी पड़ी है कि बड़े-बड़े सम्राटों और शहंशाहों ने सिंहासन को लात मारकर संन्यास की शरण स्वीकार की, आप क्या कहेंगे इसे ? उनकी समझदारी या उनका सनकीपन ? पदार्थ की इच्छा में आकंठ डूबा हुआ आदमी तो इसे उनकी मूर्खता ही कहेगा। लेकिन जो शाश्वत सत्य को जानता है, **पदार्थ और उसके स्वरुप का तथा उसकी क्षणिक उपयोगिता की सच्चाई का जिसे पता है, वह उन्हें मानव-जीवन की मूल्यवत्ता का सही पारखी ही मानेगा।** यही कहेगा कि ऐसे लोगों ने ही अपने जीवन को सार्थक किया, अन्यथा इस धरती पर जन्म लेकर गृहस्थी की गाड़ी का भार ढोते हुए मर जाना ही नासमझ आदमी की नियति है।

दीर्घकालीन हित को ध्यान में रखते हुए हमें त्याग और संयम का मार्ग लेना है। नैतिक मूल्यों का विकास करना है। अहिंसा का विकास करना है। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं है। यह ऐसे ही नहीं हो जाएगा। हमने कहा- आपने सुना बस, इतने से जीवन में संयम उतर जाएं, यह संभव नहीं है। इसके लिये प्रयोग और अभ्यास का क्रम बनाना पड़ेगा।

भीतर की चेतना को जागृत करने के लिये प्रशिक्षण का एक पूरा कम है। उसे बार-बार दोहराना होगा, संयम की प्रबल इच्छाशक्ति जागृत करनी पड़ेगी, तब कहीं जाकर भीतर में त्याग और संयम की शक्ति दृढ़ होगी। **कमिक अभ्यास से यह शक्ति दृढ़ से दृढ़तर होती जाएगी और उसी के साथ जीवन में रुपान्तरण होना भी शुरु हो जाएगा।**

क्षमा सच्चे अर्थों में....

हाथ जोड़ तन मन वाणी से,
सब जीवों से क्षमा मांगता।
जाने हो चाहें अनजाने,
अपराधों की क्षमा चाहता॥

जीव मात्र के अन्तर्तल से,
फुटे क्षमा भाव का झरना।
वैर नहीं बस मैत्री भाव हो,
सीखें हिल मिलकर रहना॥

क्षमा वंदनीय, क्षमा जिन्दगी,
क्षमा साधना, क्षमा प्रार्थना।
उनको मेरा शतशः वंदन,
जिनमें गुंजित क्षमा भावना॥

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल अगस्त-2020

मेष– ये माह आपके मान सम्मान में वृद्धिदायक रहेगा परन्तु क्रोध की अधिकता बनते हुए कार्य बिगाड़ भी सकती है। मित्रों का बेहतर सहयोग बेहतर प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधी समस्या उभर सकती है। **महत्वपूर्ण तिथि-** 7,8,9,17,18,25,26

वृष– व्यापारिक लाभ हेतु ये माह शुभ रहेगा। काफी समय से रुका हुआ लाभ प्राप्त होगा। मनोबल में वृद्धि होगी। व्यय की अधिकता संभावित है। विदेश से शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-1,2,10,11,19,20,27,28

मिथुन– ये माह व्यापारिक लाभ हेतु शुभ फलदायक रहेगा। अधिकारी वर्ग का सहयोग मनोबल में वृद्धि कारक रहेगा। धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता आवश्यक है।

महत्वपूर्ण तिथि- 2,3,4,12,13,14,21,22,30

कर्क– इस माह किये गये परिश्रम के अनुसार फल प्राप्ति से उत्साह रहेगा। भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा अत: इस समय का सदुपयोग करें। धन के लेनदेन में किसी पर आवश्यकता से अधिक भरोसा नहीं करें। **महत्वपूर्ण तिथि-**5,6,15,16,23,24

सिंह- ये माह व्यापार हेतु शुभ फलदायक रहेगा। कोई नए निवेश की योजना संभावित है। दूर स्थानों से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्या उभर सकती है।

महत्वपूर्ण तिथि-7,8,9,17,18,25,26

कन्या– इस माह कार्य से संबंधित कुछ समस्या उभर सकती है। ऋण लेने की संभावना बन सकती है। परिश्रम की अधिकता रह सकती है। धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी। पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा। **महत्वपूर्ण तिथि-**12,10,11,19,20,27,28

तुला– इस माह बेहतर व्यापारिक लाभ प्राप्त होंगे। भाग्य का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा। रचनात्मक कार्यो में रुचि रहेगी। मान-सम्मान में वृद्धि हेतु बेहतर समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 910,18,19,26,27

वृश्चिक– ये माह आपके लिये शुभ लाभदायक रहेगा परन्तु इस समय प्रतियोगी परेशानी दे सकते है। व्यय की अधिकता मन अशांत रखेगी। धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि-5,6,15,16,23,24

धनु– ये माह राजकीय कार्यो से लाभ देनेवाला रहेगा। कार्य में किसी प्रकार का परिवर्तन संभावित है। पारिवारिक वातावरण कुछ तनाव दे सकता है। माह का उत्तरार्ध बेहतर रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-7,8,9,17,18,25

मकर– ये माह कार्य क्षेत्र में परिश्रम का रहेगा परन्तु आशानुसार फल प्राप्ति नहीं होने से निराशा रह सकती है। धार्मिक कार्य में रुचि रहेगी। प्रतियोगी अथवा शत्रु हानि देने का प्रयास करेंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,2,10,11,19,20,27,28

कुम्भ- इस माह व्यापारिक कार्यो में अस्थिरता रह सकती है। बनते हुए कार्यो में बाधा संभावित है। महिला वर्ग से कुछ अनबन की स्थिति रहेगी। मान सममान प्राप्ति हेतु बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 2,3,4,12,13,21,22,30,31

मीन– इस माह आर्थिक योजनाओं से लाभ रहेगा। अधिकारी वर्ग का सहयोग मनोबल में वृद्धि करेगा। शुभ कार्यो पर व्यय रहेगा। पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,6,15,16,23,25

वर्ग पहेली क्रमांक-304

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	3	■	4		5	
	■	6		7		■		■
8	9		■	10		■	11	12
■	13			■	14	15		
16	■		■	■	■		■	
17	18		19	■	20		21	■
22		■	23	24	■	25		26
■		■	27		28		■	
29				■	30			

बाएं से दाएं:-

1- तीर्थंकर महावीर का सोलहवां भव----(4)
2- महाकवि जयशंकरप्रसाद की मशहूर रचना--(4)
6- कलोल और शेरीशा तीर्थ के निकट महावीर प्रभु का तीर्थ----(4)
8- राजपरिवार के रहने का विशाल घरः----- (3)
10- छानना का मतलब मारा मारा फिरना, गलियों में भटकना (2)
11-उत्तर प्रदेश को यदि ''उ.प्र.'' लिखते है तो मालवा प्रदेश को लिखेंगे---(2)
13- धूलिया जिले में भगवान श्री विमलनाथ का तीर्थ- ब---- (3)
14-पंजाब में बहने वाली पांच नदियों में से एक है- सत---- (2,2)
17- हाथी द्वारा खींचा जाने वाला रथः---- (4)
20- 17 वें तीर्थंकर कुंथुनाथ भगवान की निर्वाण कल्याणक की तिथि-वैशाख विदी---(3)
22- नवपद आराधना से जुड़ी है श्रीपाल...णा सुंदरी की कथा (2)
23- ज्यादा का विलोम है---- (2)
25- हम प्रतिवर्ष चेत सुदी तेरस को भ.महावीर का जन्म क---- मनाते है (3)
27- भक्ति रस पर आधारित है सन् 1963 की फिल्म- ---- में भगवान (2,2)
29- आव्यों शरणे तुम्हारा----- करजो आस पूरी अमारी, नाव्यो भवपार मारो तुम विन जग मां सार ले कोण मारी (4)
30- --देखना यानि बिना पलक झपकाए देखना (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-303 का परिणाम

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

ना	भि	रा	ज	■	म	दा	बा	द
रे	■	व	र	मा	ण	■	म	■
ल	व	ण	■	य	पु	■	न	मो
■	सु	पा	र्श्व	■	र	वि	वा	र
ग	■	र्श्व	■	■	■	ज	■	नी
ब	द	ना	व	■	सु	य	शा	■
न	न	■	स्तु	ति	■	मं	खा	ली
■	पु	■	पा	ल	सा	ग	■	पु
बी	र	ब	ल	■	ता	ल	प	त्र

ऊपर से नीचे:-

1- मालवा के सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा आरंभ संवत् ----(4)
2- इस नगर में स्थित है करेड़ा पार्श्वनाथ का तीर्थ ----(3,3)
3- जिन खोजा---- पाड्यां गहरे पानी पैठ, मैं बपुरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ-कबीर (2)
4- कर्णाटक में स्थित भ.नेमिनाथ का तीर्थ----(4)
5- भ.धर्मनाथजी का च्यवन इस देवलोक से आकर हुआ-विज---- (1,3)
7- मित्र, साथी का पर्याय----(2)
9- किसी समस्या के समाधान का अर्थ है उसे---- करना (3)
12-मशहूर गीत ''ए मेरे वतन के लोगों....'' के गीतकार है बड़नगर के मशहूर कवि----(3)
15-तीर्थंकर का जन्म दिवस कहलाता है---- (2,4)
16-तीर्थ दो तरह के होते है स्थावर और---- (3)
18-बारह चक्रवर्ती में से एक ---- (4)
19-कठिन परिश्रम करने के बाद इंसान----- चूर हो जाता है (4)
21-जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर है श्री---- भगवान महावीर (2)
24-महर्षि रमण का वास्तविक नाम था वेंकटर--- अय्यर (2)
26-स्वर्ण का पर्याय ---- (3)
28-हिंदी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन हैः- तथा अंग्रेजी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है- (1,1)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-304

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

मुझे पहचानिये:-

1- मैं जानता कि इस पक्षी ने सोने के दाने चुगे है फिर भी मैं मौन ही रहा।

2- पुराने को नया और नये को पुराना बनाना मेरा ही तो काम है।

3- मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूं कि ससुरजी ने मुझे मोक्ष की पगड़ी पहनाई।

4- जैन मुनि कभी झूठ नहीं बोलते, ये विश्वास ही मुझे सन्मार्ग पर ले आया।

5- जिस श्लोक का अर्थ मैं नहीं कर पाऊंगा, उसका मैं अर्थ समझाने वाले का शिष्य बन जाऊंगा।

6- चूड़ी के निमित्त से एकत्व भावना भाते मुझे वैराग्य हुआ।

7- मेरे तप का पारणा जहां-जहां होता था, वहीं-वहीं श्रावक जिनालय बनवाते थे।

8- मैं एक रात्रि में ही संयम के कष्टों से चलित हो गया पर परमात्मा ने मुझे स्थिर किया।

9- मैंने भाई के पास बिना इच्छा से दीक्षा ग्रहण की।

10-पुत्र के गर्भ में आने पर मुझे हाथ की अंबाड़ी पर बैठने का आवेश उत्पन्न हुआ।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICICI0000300

वर्गपहेली क्रमांक-303 के परिणाम

1- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, (म.प्र.) - प्रथम
2- अनुजा जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय
3- भारती जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :—

स्नेहलता जैन, मंदसौर, प्रभा जैन, सुधा धारीवाल श्रीमती मीना जैन, देवास।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक—303 के परिणाम

1- भेरुलाल पगारिया, उज्जैन (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीकृष्णकुमार जालोरी, विदिशा(म.प्र.)-द्वितीय
3-शशि भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- जराकुमार, 2- कोणिक, 3- ब्रह्मदत्त, 4-नागार्जुन 5- मिच्छामि दुक्कड़म्, 6- अमरकुमार 7- आर्यरक्षित, 8- बाहुबली, 9- अकबर बादशाह 10- भरत।

इनके भी उत्तर सही थे :—

श्रीमती सुधा धारीवाल, श्रीमती प्रभा जैन, श्रीमती मीना जैन, भारती जैन, श्रीमती चंदनबाला जैन, अनुजा जैन, देवास।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2020 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

भोपावर प्रतिष्ठचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी की निश्रा में कल्याण मंदिर स्रोत महातपस्या तीन श्री संघों में हो रही है

* श्री नमस्कार महामंत्र 9 लाख का जाप हुआ।
* अनेक धर्मिष्ठों ने ने 9 लाख जाप करने के पच्चखाण लिये।
* श्री भगवती सूत्र और मलय सुन्दरी चारित्र पर प्रवचन।
* अखण्ड अट्ठम और आयंबिल तपाराधना चल रही है।
* श्री भवगती सूत्र का रोज सोने-चांदी की गिन्नी से बहुमान।
* मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी का 90 वीं ओली चल रही है।

उज्जैन- सागर समुदाय के गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री देवेन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य 79 वर्षीय अवस्थावाले और 63 वर्ष के संयम प्रचार्य का चुस्त पालन करनेवाले श्री भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठायक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेव सागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. का चार्तुमास जोरदार शासन प्रभावक आराधना के साथ प्रसार हो रहा है। पूज्यश्री के प्रवेश के उपरांत 10 जुलाई से श्री भगवती सूत्र और मलयसुन्दरी चारित्र पर प्रवचन का शुभारंभ श्रुतज्ञान की भक्ति के साथ हुआ साथ ही आपश्री की निश्रा में 9 लाख महामंत्र नवकार का अखण्ड जाप भी प्रारंभ हुआ। अनेक धर्मिष्ठों ने 9 लाख मंत्र जाप करने के लिये पच्चखाण भी लिये। आपश्री की निश्रा में 44 दिवसीय श्री कल्याण मंदिर तपाराधना का आयोजन भी 11 जुलाई से शुभारंभ हुआ। बड़ा उपाश्रय में विराजित आचार्य भगवंत श्री मुक्ति सागरसूरीजी म.सा. एवं साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. तथा नयापुरा में श्री चन्द्रप्रभस्वामी श्री संघ में विराजित साध्वीवर्या श्री मुक्ति रेखाश्रीजी की निश्रा में भी तप हो रहा है। श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर वरिष्ठ साध्वी श्री दमिताश्रीजी म.सा. ने श्राविका बहनों को तप की प्रेरणा दी।

पूज्यश्री की निश्रा प्रवेश के बाद 4 जुलाई से निरंतर अट्ठम तपाराधना और आयंबिल तप की अखण्ड सांखली आराधना चल रही है। पूज्य मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 90 वीं आराधना तप की ओली सातापूर्वक चल रही है।

पू.मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा.ने 91 वीं ओली पूर्ण की

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण श्री नवरत्नसागरसूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य ने गुरुदेव के पदचिन्हों पर चल कर श्री वर्धमान तप की 91 ओलीजी 28 जून को पूर्ण की है, आपका पारणा 29 जून को हुआ। बहुत-बहुत अनुमोदना।

साध्वीश्री सिद्धीयशाश्रीजी की बड़ी दीक्षा हुई

सूरत- पूज्यपाद सागर संघा सरताज जिनागम सेवी गच्छाधपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा, आचार्य भगवंत श्री नंदिवर्धन सागरसूरीजी महाराजा, पूज्य अ ाचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वी की पावन निश्रा में यहां चार्तुमास आरंभ होने के पूर्व साध्वीवर्या श्री सिद्धीयशाश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आचार्यश्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री मोक्षरत्नसूरीजी म.सा. भी पधारे।

बागड़ विभुषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी की प्रेरणा से सागर गच्छाधिपति दीर्घायु हेतु महामंत्र और सामायिक का अर्ध अर्पण किया

बदनावर-पूज्यपाद आचार्य देवेश गुरुदेव मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के तृतीय सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. के द्वारा गुरु समर्पण की अद्भूत प्रेरणा साकार हुई। पूज्य जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर पूज्यश्री की दीर्घायु के लिये वागड़ प्रदेश में 36 लाख महामंत्र नवकार एवं 36 सामायिक की आदरांजलि अर्पित की गई। 15 जुलाई को प्रातः 6 से 9 हजार राजस्थान के पूरे वागड़ श्रीसंघों पर आयोजन सम्पन्न हुआ। जयणा मंगल महिला मंडल के तत्वावधान में यह समर्पण भाव पूर्ण हुआ। पूज्यश्री ने इसके लिये सभी श्रीसंघ को धर्मलाभ दिया **21 जुलाई को आपश्री की महामांगलिक हुई।**

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

सरकार की मर्यादा और नियम के मध्य श्री सिद्धगिरी महातीर्थ में युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरजी का चार्तुमास जंबुद्वीप में

- ✻ प्रवचन आदि धार्मिक कार्यक्रम मांगलिक रुप में।
- ✻ साध्वी भगवंतों के जोग की प्रक्रिया धर्मानुसार हो रही है।
- ✻ भक्तों का आगमन-निर्गम भी नहीं के बराबर।
- ✻ आगे के आयोजन भी सरकार की गाईड लाईंस के अनुसार।
- ✻ 21 जुलाई को महामांगलिक भी मांगलिक स्वरुप से हुई।

पालीताना- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म. सा., उपाघ्याय श्री वैराग्य रत्नसागरजी मुनिश्रीकीर्तिरत्न सागरजी मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी, मुनिश्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास कोरोना महामारी के मध्य शांतभाव से प्रसार हो रहा है। शासकीय नियम और मर्यादा को ध्यान में रखते हुए प्रवचन आदि अन्य सभी धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन मांगलिक स्वरुप में हो रहा है। आगे भी कोई भी धार्मिक आयोजन सरकार की गाईड लांईस के मुताबिक होंगे। इसी बीच आप गुरुदेव श्री आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा का 147 वीं जन्मोत्सव 20 जुलाई को पालीताना में मनाया गया है जिसमें सभी मर्यादा के पालन का ध्यान रखा गया। चार्तुमास के दौरान जैसा सरकारी निर्देश होगा उसके अनुसार धार्मिक कार्यक्रम होंगे, लगता है इस बार महापर्व पर्युषण की आराधना भी प्रभावित होगी। 31 जुलाई के बाद नई गाईड लाईन आने पर अगस्त के बारे में जानकारी मिलेगी। स्मरण रहे महापर्व की आराधना 15 अगस्त से आरंभ होना है। 21**जुलाई को आपश्री की महामांगलिक हुई।**

आचार्य भगवंत श्री मालव भूषण तप सम्राट नवरत्नसागर सूरीश्वर के कृपा प्राप्त द्वितीय ***शिष्यरत्न युवा जैनाचार्य युवा हृदय सम्राट श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.*** *आपका मंगलमय चातुमार्सिक मंगल प्रवेश श्री जम्बुदीप परिसर में 28 जून को हुआ। आपश्री भोपावर तीर्थ की प्रतिष्ठा की संपन्न करवाकर पालीताना में चैत्र मास की नवपद ओली व अक्षय तृतीया पर वर्षीतप का पारणा कराने हेतु पधारे आपश्री का चार्तुमास श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होना था लेकिन कुदरत को कुछ और ही मंजूर था, किंतु कोरोना महामारी के कारण सभी धार्मिक कार्यक्रम स्थगित होने से चार्तुमास पालीताना हो रहा है। आदिनाथ प्रभु की छत्र छाया में चार्तुमास करने का 7 वर्ष पश्चात पुनः अवसर प्राप्त हुआ है, पहले भी 5 माह का चार्तुमास था, इस बार भी 5 माह का वर्षावास का योग है। गुरुदेव की निश्रा में चार्तुमास दौरान साधु-साध्वीजी भगवंत बृहत्त योगोद्वहन की क्रिया कर रहे है।*

गुरु नवरत्न की कृपा से व आचार्यश्री की प्रेरणा से श्रमण-श्रमणी भगवंतों का सुपात्र दान भक्ति का भी कार्य चल रहा है जिसमें इस विषम परिस्थिति में अनेक भाग्यशाली गुरु भक्तों ने सुकृत का पुण्याकारी पुण्य उपार्जन किया। ***आपश्री चार्तुमास हेतु जम्बुद्वीप वर्धमान पेढी, पालीताना (गुज.) में विराजमान है।***

✻ नया बैर भी मोल न लेना कारण यह कि बैर करके किस काल तक सुख भोगना है ? -ऐसा तत्वज्ञानी सोचते हैं।

श्री शत्रुंजय गुरु नवरत्न चार्तुमास समिति - जम्बुद्वीप पालीताना

चार्तुमास मुख्य लाभार्थी सहयोगी:-

✻संघवी श्रीमती पानीदेवी मोहनलालजी रुगनाथमलजी सोनवाड़िया, मुथा परिवार,भाँडवला, मोहनमुथा एयरपोर्ट, चैन्नई

✻ मातुश्री मनोरीबेन कंवरलालजी बैद, (करवरलार कंपनी) चैन्नई

✻श्री हुकमीचंदजी कोठारी, हस्ते-कपिलकुमार राजकुमार कोठारी परिवार, सूरत

✻बंसुरी बेन बनुलभाई झावेरी, हस्ते- मानसीबेन चिंतनभाई शाह परिवार, मुंबई

✻मातुश्री बादलदेवी टोडरमलजी कटारिया परिवार, इन्दौर

चार्तुमास सहयोगी:-

✻मुनिराज श्री पद्मरत्नसागरजी म.सा. के सांसारिक परिवार, राधनपुर तीर्थ निवासी श्री वीर-श्वेता-आलाप गांधी-राश्वी, रेया, आदिती, प्रशांतभाई गांधी परिवार, मुंबई

✻मुनिराज श्रीलब्धिरत्नसागरजी म.सा. के सांसारिक परिवार शा.अभयचंद्र भानाजी परिवार, चैन्नई

✻पूज्य पिताश्री चंपालालजी फुलेरा चौधरी, हस्ते-अरुण पद्मा फुलेरा परिवार, पिपलोनकलां,

✻श्रीमान सूरजमलजी मांगीलालजी मानवत परिवार, मुंबई

✻ वैपेरी महिला मंडल, चैन्नई

✻मातुश्री झमकुबाई केशरीमलजी हड़पावत, हस्ते-धनपालजी-पुष्पादेवी हड़पावत परिवार, प्रतापगढ़

✻ मातुश्री संघवी मदनबेन शोभागमलजी डावड़ा, हस्ते-शैलेषजी-मिनाक्षी-शरदजी-संगीता डावड़ा परिवार-प्रतापगढ़

✻संघवी पंकुबाई भुरमल दलीचंदजी कोठारी परिवार, बड़गांव, चैन्नई

✻श्री वेलजीभाई माणेकचंद्रजी मणियार परिवार, शंखेश्वर, सूरत

✻श्री संजयकुमार मांगीलालजी सिसौदिया, ताल

✻ परम पूज्य साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्र श्रीजी म.सा. (दादी म.सा.) की प्रेरणा से रतनबेन-इन्दरमलजी मण्डोवरा, कमलकुमार, विकासकुमार, कांताबेन मण्डोवरा, (नगर सेठ), देपालपुर

✻ प.पू. साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योतिश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से मातुश्री मांगीदेवी शांतिलालजी बड़ मुथा परिवार, कोयम्बतुर

✻प.पू.साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योतिश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से एक सद्ग्रहस्थ परिवार

✻श्री रमेशजी, प्रितेशजी, दिपेशजी ओस्तवाल परिवार, नवरत्न परिवार राष्ट्रीय अध्यक्ष, इन्दौर

✻श्रीमती तेजाबाई माणकलालजी हरणिया, हस्ते- जयंतिलालजी, पारसजी, अभयकुमार,आशिषकुमार तेलवाला परिवार, उज्जैन

✻बीनाबेन प्रफुल्लभाई अमिचंद झावेरी, हस्ते- कौशल-उष्मा, हेमल-नेहल, प्रियल-काव्या, प्रणया-पियाना झावेरी परिवार, मुंबई

✻एक सद्गृहस्थ परिवार

✻ पुष्पों में कमल, सुगंधों में कस्तुरी, स्त्रियों में रम्भा काष्ठों में चंदन,अश्वो में पंच बल्लभ वनों में नन्दन वन, वाद्यों में भंभा, हस्तियों में ऐरावत, अलंकारों में चूड़मणि, नृत्यगान में मयुर नृत्य,ज्योतिष्कों में नीलमणि, पटतंतु में हीर,वस्त्रों में चीर,जल में गंगाजल, देवों में जिनेश्वर देव, दान में अभयदान जैसे श्रेष्ठ है वैसे जगत भर के पर्व महापर्वो में सर्वोत्कृष्ट पर्वराज श्री पर्युषण अति श्रेष्ठ और अलौकिक तारणहार पर्व है।

सारे देश में आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी का 147 वां जन्म महोत्सव आगम प्रदर्शनी और गुरु गुणानुवाद के साथ मनाया गया

- ❊ **मुख्य आयोजन सूरत में सागर सरताज गच्छाधिपति की निश्रा में मना।**
- ❊ **गुजरात,महाराष्ट्र,मध्यप्रदेश, राजस्थान, दक्षिण भारत के राज्यों में आयोजन हुए।**
- ❊ **डॉ. निकालकर पुरस्कार दिये गये।**

उज्जैन- जैन जगत को 45 आगम ग्रंथों का वारसा प्रदान करनेवाले गुरुदेव पूज्यपाद आचार्य देवेश आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा (पूज्य श्री आनंदसागरसूरीजी महाराजा) के 147 वां जन्मोत्सव पर देश के अनेक राज्यों से भावपूर्वक स्मरण गुरु गुणानुवाद सभा और अनेक धार्मिक आयोजन के साथ मनाया गया। 20 जुलाई को हुए मुख्य कार्यक्रम सागर गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा, अजात शत्रु आचार्य श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी म.सा.,आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा.आदि की पावन निश्रा में हुआ साथ पालीताना,सूरत,अहमदाबाद,मुंबई, चैन्नई, बैंगलोर,भावनगर, उज्जैन, राजोद, बदनावर, इन्दौर, बड़नगर, शंखेश्वर, धार, नीमच,रतलाम, भोपाल, बेटमा, मांडवगढ़ आदि स्थानों पर विराजित साधु-साध्वी भगवंतों के साथ गुरु भगवंतों के द्वारा पूज्यश्री के जैन जगत को दिये अवदान और आगम ग्रंथों के महत्व पर प्रकाश डाला। अनेक श्रीसंघों में गुरुदेव के मे स्मरण, भव्य गहुंली रंगोली सजाई गई। आगम प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रभावना भक्ति के आयोजन भी हुए।

आपने कभी ख्याल किया.... - आशय जैन

❊ जब मैं तीन वर्ष का था तब सोचता था कि मेरे पिता दुनिया के सबसे मजबूत और ताकतवर व्यक्ति हैं।

❊ जब मैं छह वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता दुनिया के सबसे ताकतवर ही नहीं समझदार भी हैं।

❊ जब मैं 9 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया तो मेरे पिता को दुनिया की हर चीज के बारे में ज्ञान है।

❊ जब मैं 12 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे मित्रों के पिता मेरे पिता के मुकाबले ज्यादा समझदार है।

❊ जब मैं 15 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता को दुनिया के साथ चलने के लिए कुछ और ज्ञान की आवश्यकता है।

❊ जब मैं 20 वर्ष का हुआ तो मैंने महसूस किया कि मेरे पिता किसी ओर दुनिया के है और वे हमारी सोच के साथ नहीं चल सकते।

❊ जब मैं 25 वर्ष का हुआ तो मैंने महसूस किया कि मुझे किसी भी काम के बारे में अपने पिता से सलाह नहीं करनी क्योंकि उनमें हर काम में कमी निकालने की आदत पड़ गई।

❊ जब 30 वर्ष का हुआ तो मुझे लगा कि मेरे पिता को मेरी नकल करके कुछ समझ आ गई।

❊ जब मैं 35 वर्ष का हुआ तो मुझे लगने लगा कि मुझे अपने पिता से छोटी-मोटी बातों के बारे में सलाह ले लेनी चाहिये।

❊ जब मैं 40 वर्ष का हुआ तब मुझे लगा कि अब जरुरी मामलों में भी पिता की सलाह की आवश्यकता है।

❊ जब मैं 50 वर्ष का हुआ तब मैंने फैसला किया कि अब मुझे अपने पिता की सलाह के बिना कुछ नहीं करना चाहिये क्योंकि मुझे ज्ञान हो गया कि वे समझदार व्यक्ति हैं पर इससे पहले कि मैं अपने फैसले पर अमल करता, मेरे पिताजी इस संसार को अलविदा कह गये और मैं अपने पिता की हर सलाह और तजुर्बे से वंचित रह गया।

❊ सोचो जरा इस तथ्य और सत्य से हम अपरिचित तो नहीं है।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✲ गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर परिसर, बड़नगर जिला उज्जैन, बड़नगर (म.प्र.) में हो रहा है।

✲ साध्वी श्री वीरेशाश्रीजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन आराधना भवन, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.) में हो रहा है।

✲ आचार्यश्री देवेन्द्रसागरसूरीजी म.सा. का चार्तुमास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ राजाजी नगर, बैंगलोर (कर्नाटक) में हो रहा है।

✲ मुनिप्रवर श्री देवप्रभसागरजी म.सा.,मुनिश्री विनीतसागरजी म.सा., मुनिश्री विनम्रसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, पायधुनी मुंबई (महा.) में हो रहा है।

✲ मुनिश्री धार्मनंदविजयजी म.सा. का चार्तुमास श्री चंदप्रभ स्वामी श्वेतांबर मंदिर जैन संघ, शातावाड़ी उपाश्रय जे.पी.रोड़, बाम्बे बाजार की गली, अंधेरी (वेस्ट) मुंबई (महा.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीजी का चार्तुमास जैन जहाज मंदिर पोस्ट-मांडवला जिला जालोर, मांडवला (राज.) में हो रहा है।

✲ साध्वीवर्या श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-7 का चार्तुमास प्रवेश 29 जून को महावीर स्वाध्याय भवन, 18 अरविंदनगर, सुन्दरवास, उदयपुर (राज.) में हुआ।

✲ पूज्य आचार्य श्री अजीतशेखर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, चिकपेठ- बैंगलुरु (कर्ना.) में चल रहा है।

सूरत में चार्तुमास

✲ पूज्य आचार्य श्री यशोविजयजी म.सा., श्री ऊँकार सूरी जैन आराधना भवन, पाल-सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा.,लाल बंगला जैन श्री संघ, अंठवा लाईन्स, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री कुलचंद्र सूरीश्वरजी म.सा., बाबू निवास गली, जैन संघ, नानपुरा, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री मुक्तिप्रभ सूरीजी म.सा., श्री रामचन्द्रसूरी आराधना भवन जैन संघ, पोर्ल पाईन्ट, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सूरीश्वरजी म.सा., श्री शांतिवर्धक आराधना भवन जैन संघ, पाल,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्यश्री अजीतसेन सूरीश्वरजी म.सा. श्री रामचन्द्रसूरी, आराधना भवन, जैन संघ, गोपीपुरा, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री तपोरत्न सूरीश्वरजी म.सा., श्री नागेश्वरतीर्थ धाम, मगरल्ला,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री श्रमणचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. श्री रांदेर रोड़, जैन संघ, रांदेर रोड़,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री भाग्येशविजय सूरीश्वरजी म.सा., श्री ऊँकार सूरी आराधना भवन, वेसु जैन संघ, वेसु सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री रत्नचंद्र सूरीजी म.सा., श्री उमरा जैन संघ, उमरा,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री राजहंस सूरीश्वरजी म.सा., श्री दशिता पार्क जैन संघ, अड़ाजण, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री संयमबोधि सूरीश्वरजी म.सा., श्री दीवाली बाग जैन संघ, अढवागेट,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य आचार्य श्री रश्मिराज सूरीजी म.सा., श्री वास्तु लकझुरिया जैन संघ, डूम्मस रोड़, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य उपाध्याय श्री भद्रेश्वर विजयजी म.सा. विक्रमनगर जैन संघ, विक्रमनगर,सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य उपाध्याय श्री सम्यकचंद्र विजयजी म.सा., श्री नेमूभाईवाड़ी जैन उपाश्रय, गोपीपुरा, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य गणिश्री यशोजित विजय जी म.सा., श्री रामचंद्र सूरी जैन संघ, फोनिक्स-वेसु, वेसु-सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✲ पूज्य गणिश्री प्रशमय विजयजी म.सा., सुधा कलश जैन बंगला, अठवां लाईन्स, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✽ पूज्य पंन्यास श्री मोक्षांगरत्न विजयजी म.सा., श्री वासुपूज्य जैन संघ, भटार रोड़, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✽ पूज्य पंन्यास श्री भद्रकीर्ति विजयजी म.सा., श्री वड़ाचौटा जैन संघ वड़ाचौटा, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✽ पूज्य मुनिश्री कल्पचंद्रसागरजी म.सा., श्री आगमोद्धारक जैन संघ, वेसु-सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✽ पूज्य आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा., स्थानकवासी जैन संघ, कडोदरा -सूरत (गुज.) में हो रहा है।

✽ पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचंद्र सागरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश जैन छोटा मंदिर, सैलाना (रतलाम) म.प्र. में 2 जुलाई को हुआ।

प्रभु वीर की श्रमण परम्परा का वारसा आगे बढ़ानेवाले दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री का देवलोकगमन : जैन जगत को अपूरणीय क्षति

सूरत- कैलाशनगर जैन श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजीत आचार्य श्री प्रेमसूरीजी म.सा. के पट्टधार श्री भुवनभानसूरीजी के शिष्य आचार्य श्री जितेन्द्रसागरसूरीजी के सुशिष्य दीक्षा दानेश्वरी आचार्य भगवंत श्री विजय गुणरत्नसूरीजी म.सा. का 14 जुलाई की रात्रि 3.30 बजे देवलोकगमन हो गया। विगत दो-तीन महिने में जैन जगत के साधु-साध्वी भगवंतों के देहत्याग करने से अपूरणीय क्षति हुई है। सन् 1932 में राजस्थान के पादरली जालोर में जन्म लेनेवाले गणेशमलजी की दीक्षा 1954 में होने के बाद आप मुनिश्री गुणरत्नविजयजी बने, आपश्री को आचार्य पद 1988 में पादरली में ही प्रदान किया गया। आप एक ऐसे जैनाचार्य है जिनकी शासन प्रभावना की मिसाल मिलना मुश्किल है। 451 श्रावक-श्राविका को दीक्षित करनेवाले आचार्यश्री ने सगाई छोड़कर दीक्षा ग्रहण की थी। आपश्री की निश्रा में जीरावला तीर्थ में 3200 आराधकों ने चैत्र ओली एक साथ की। 2700 धर्मिष्ठों के साथ मालेगांव से पालीताना का संघ इसके साथ ही 6000 हजार धर्मिष्ठों के साथ राणकपुर का संघ, 7000 धर्मिष्ठों के साथ पालीताना से गिरनार का संघ आपकी निश्रा में निकले। सूरत में 28 तथा पालीताना 38 मुमुक्षु को एक साथ दीक्षित किया। शंखेश्वर तीर्थ में 4700 अट्ठम तप की आराधना तथा 1700 आराधकों के साथ उपधान करवाया। 1200 सौ धर्मिष्ठों के साथ नव्वांणु यात्रा भी आपकी निश्रा में हुई। इसके साथ ही सूरत-पालीताना-अहमदा-बाद में 51000-55000 धर्मिष्ठों के साथ सामुहिक सामायिक का आयोजन भी आपकी निश्रा में हुआ।

कालधर्मः-

✽ ह्रींकार तीर्थ इन्दौर के संस्थापक श्री भद्रानंदविजयजी म.सा. का चार्तुमास आरंभ होने के बाद दिनांक 10 जुलाई को राजस्थान-सिहोर के श्री विजयपताका तीर्थ में देवलोक हो गया।

✽ सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री प्रशमरत्नाश्रीजी (66) का 42 वर्ष दीक्षा पर्याय के उपरांत मुंबई के घाटकोपर में 7 जुलाई को देवलोक हो गया।

✽ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री भव्यनंदाश्रीजी म.सा. (80) का 70 वर्ष दीक्षा पर्याय के उपरांत देवकरण-मलजी श्री संघ मलाड़ (वेस्ट) में 3 जुलाई को देवलोकगमन हो गया।

✽ प.पू. आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा समुदाय वर्तीय साध्वीवर्या मिनेषाश्रीजी म.सा. का (54) का 45 वर्ष दीक्षा पर्याय उपरांत पालीताना आगममंदिर में कालधर्म दिनांक 19 जुलाई को हुआ।

अस्वस्थः-

✽ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री गुणज्ञा श्रीजी म.सा. का इन्दौर में चार्तुमास दौरान तबीयत बिगड़ने से अरविंदो अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। आपको खून भी चढ़ाया गया। अभी स्वास्थ्य स्थिर है।

आगम नाम कंठस्थ आयोजन

नीमच- श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ श्री संघ में पूज्य मुनि प्रवर श्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. की निश्रा में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के 147 वें जन्म महोत्सव पर ''45 आगमग्रंथ के नाम कंठस्थ करने का कार्यक्रम'' आयोजित किया गया। सभी उम्र के श्रावक-श्राविका ने भाग लिया

✽ प्रार्थना में यदि किसी के प्रति तुम्हारे मन में कोई विरोध खड़ा हो तो तत्काल क्षमापना कर दो, अन्यथा परम पिता तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।

सागर समुदाय में मालवा से एक और श्रावक ने श्रमण धर्म स्वीकार कर मुनिश्री भविकरत्नसागर नाम पाया

भोपाल- वैसे तो मालवा का पूरा क्षेत्र सागर समुदाय के जिनशासन को दिये योगदान से गौरांवित है ही लेकिन निरंतर ऐसे शुभ शासन प्रभावक घटना क्रम घटित होते रहते हैं जिससे परमात्मा के शासन को चार चांद लग जाते है इसलिये संपूर्ण जैन जगत में मालवा के योगदान को बहुत सम्मान पूर्वक स्मरण किया जाता है, यही नहीं दर्शन ज्ञान और चारित्र के क्षेत्र में मालवा के श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा जो आराधना की गई है उसको भूला पाना असंभव है, अनेक साधु-साध्वी भगवंत ने मालवा में परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन के उत्थान के लिये जो साधना आराधना की गई है उसने मालवा को जैन जगत में वीर प्रभु के शासन में अमर कर दिया है।

उज्जैन स्थित श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर अपने बुजुर्गो की विरासत के साथ मालवोद्धारक जैनाचार्य श्री चन्द्रसागरसूरीजी महाराजा के वारसा को सुशोभित रखते हुए 40 वर्ष तक अध्यक्ष के रुप में काम करनेवाले श्री महेन्द्र सिरोलिया से मालवा के लगभग सभी संघ परिचित रहे है। ऐसे महेन्द्रजी सिरोलिया ने अपने जीवन के उत्कर्ष में समर्पण कर परमात्मा श्री महावीरस्वामीजी की प्रेरणा परम्परा को स्वीकार कर एक बार पुनः जैन जगत में मालवा का नाम रोशन कर दिया।

उज्जैनवासियों को जुन के अंतिम सप्ताह में आपके दीक्षा लेने के निश्चय की जानकारी मिले, आप विगत कुछ समय से बैंगलोर में कार्यरत अपने सुपुत्र श्री सौरभ सिरोलिया के साथ रह रहे थे जुन के अंतिम सप्ताह में आप उज्जैन आये तो सबको यह हर्ष मिश्रित विस्मय करनेवाली सूचना मिली। पेढ़ी पर आपका पेढ़ी के साथ उज्जैन श्री संघ की अनेक संस्थाओं के द्वारा अभिनंदन किया गया।

आपने पूज्यपाद मालवा भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के प्रशिष्य अध्यात्मयोगी गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.का गुरुत्व स्वीकार किया है जो वर्तमान में चातुमार्सिक आराधना के लिये भोपाल में विराजित है । यहीं पर दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया गया। 1 जुलाई को प्रातः शुभ लग्नांश बेला में मुमुक्षुश्री महेन्द्र सिरोलिया की दीक्षा विधि का कार्यक्रम हुआ। आपका परिवार भी उपस्थित रहा। दीक्षा के उपरांत आपका मुनि नाम **मुनि श्री भविकरत्नसागर** घोषित किया गया। नूतन मुनि अभी चातुमार्सिक आराधना में भोपाल में ही विराजित रहेंगे। आगमोद्धारक परिवार की ओर से बहुत-बहुत अनुमोदना।

अपूर्व गुरु परिवार के द्वारा श्री नेमि पार्श्वप्रभु के कल्याणक पर त्रिदिवसीय आराधना का आयोजन

✻ 25 से 27 जुलाई को ऑनलाईन धर्मिष्ठ जुड़े।

✻ 108 लक्की ड्रा द्वारा आराधक सम्मानित किये गये।

शंखेश्वर- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में आगम मंदिर परिसर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागर जी म. सा.आदि साधु-साध्वी के सानिध्य और प्रेरणा से नेमि पार्श्व आराधना उत्सव का आयोजन ऑन लाईन किया गया। दिनांक 25 से 27 जुलाई तक तीन दिन तक आराधक आराधना से जुड़े। 25 जुलाई को श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक पर उपवास 26 जुलाई को प्रभु के दीक्षा कल्याणक पर एकासणा और 27 जुलाई को श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मोक्ष कल्याणक पर उपवास के साथ यह आराधना महोत्सव मनाया गया। आराधक मोबाईल पर पंजीकरण करवाकर जुड़े। 108 भाग्यशाली विजेता लक्की ड्रा के द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम नव-अपूर्व-अमर परिवार के द्वारा आयोजन किया गया।

✻ यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश दौलतसागरसूरीजी महाराजा के सौवें जन्म दिन पर सम्पूर्ण जैन जगत में अनुमोदना धार्मिक आयोजन की श्रृंखला बनी

- ✻ देशभर में नमो आपरियांणं पद के साथ जन्म तपोत्सव के आयोजन।
- ✻ पूज्यश्री सूरत में चार्तुमास हेतु विराजित है।
- ✻ 8 जून से 13 सितंबर तक महोत्सव की श्रृंखला।
- ✻ 20 मई से भी आराधना के आयोजन।
- ✻ अनेक क्षेत्रों में 100 दिवसीय अनुमोदना।
- ✻ देशभर के श्री संघों आदर के साथ आनंद छाया।

अहमदाबाद- सुविशाल सागर समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण करने जा रहे है। पूज्यश्री जैतपुर नामक गाँव जो मेहसाणा गुजरात के समीप है, वहां के एक पाटीदार समाज से है, आपश्री ने जेतपुर में भव्य जिन मंदिर का निर्माण करवाया है जहां नियमित 40-50 अजैन सेवा पूजा आरती के लिये आते हैं। आपश्री की एक अद्भूत अविस्मरणीय देन जैन जगत को है जो पूना के कात्रज में आगम मंदिर के नाम से विख्यात है, पूर्व में पूज्यश्री का चार्तुमास और 100 वर्ष की वय पूर्ण कर लेने पर एक अविस्मरणीय आयोजन पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन और प्रेरणा से पूना में होना था किंतु कोरोना महामारी से अब आपश्री चार्तुमास हेतु सूरत में ही विराजित है यहां आपश्री का प्रवेश 24 जून को हुआ। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी, पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वीवृंद के साथ श्री घोड़रोड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ सरेलावाड़ी सूरत-395007 (गुज.) में आपका चार्तुमास हो रहा है। आपश्री के100 वर्ष पूर्ण कर लेने पर सारे जैन जगत में 100 दिवस तक जन्म तपधर्म महोत्सव के आयोजन हो रहे है। पूज्यपाद जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से नमो आयरियांणं पद के एकासणा के साथ 2 करोड़ मंत्रों का जाप भी चल रहा है। यह कार्यक्रम 13 सितंबर 2020 तक चलेगा। सूरत में होनेवाले जन्मोत्सव के आयोजन की रुपरेखा अभी आने वाली है। पूज्यश्री के जन्म महोत्सव के अंतर्गत 100 दिन तक भारतभर के जैन श्रीसंघों में अष्टप्रकार की पूजन, स्नात्र पूजन, नवकारसी, जीवदया,अनुकम्पा दान, एकासणा, आयंबिल चारित्र पद की आराधना जैसे अनेक धार्मिक आयोजन हो रहे है। पूज्यश्री को धर्म आधारित इस समर्पण महोत्सव में हजारों हजार श्रावक-श्राविका भाग ले रहे है। यहीं नहीं सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंत भी चारित्र धर्म की मर्यादा के अनुकूल आराधना में संलग्न है। पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में सारे देश के जैन श्री संघों में अनेक तरह के आयोजन हो रहे है। सरेलावाड़ी में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. अनुप्रेरित एक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है जिसमें श्रावक-श्राविकाओं के लिये विभिन्न जिनशासन संबंधी धार्मिक आराधनाओं की सूची दी गई है। आराधकों से इससे जुड़ने का आग्रह किया गया है।

सिरोड़ी में चार्तुमास प्रवेश सम्पन्न

सिरोड़ी- श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन प्रभु की पावनकारी सानिध्यता में सिरोड़ी नगर प्रथम आचार्य श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा.आदि-7 ठाणा ने चार्तुमास प्रवेश किया। छोटी कन्या 9 ने बैंडे व बालकों ने ध्वज हाथ लेकर मांगलिक प्रवेश वधायणा किया। जैन मंदिर के दर्शन करके उपाश्रय में मांगलिक प्रवचन, गुरुपूजन, कांबली अर्पण किया गया। गुरुदेवश्री ने मंगल प्रवेश पर सामुहिक 75 आयंबिल तप मांगलिक किये। पूज्यश्री के साथ पं.श्री वैराग्यरत्न विजयजी म.सा., पं.श्री जयेशरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री जिनेन्द्ररत्न विजयजी म.सा., मुनिश्री श्रुतरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री अर्हद्रत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री कीर्तरत्नविजयजी म.सा.आदि 7 संतों ने चार्तुमास प्रवेश किया।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	भादवा वदी-11	शनिवार	15-8-2020	अट्ठाई घर महापर्व पर्युषण आरंभ दिन
2-	भादवा वदी-14	मंगलवार	18-8-2020	श्री कल्पधर कल्पसूत्र वाचन आरंभ
3-	भादवा वदी-30	बुधवार	19-8-2020	श्री महावीर स्वामीप्रभु जन्मवाचन दिवस
4-	भादवा सुदी-2	गुरुवार	20-8-2020	तेलाघर गणघर वाद
5-	भादवा सुदी-4	शनिवार	22-8-2020	संवत्सरी महापर्व बरसा सूत्र वाचन- संवत्सरी महाप्रतिक्रमण
6-	भादवा सुदी-11	शनिवार	29-8-2020	पूज्यपाद जगतगुरु श्री विजय हीरसूरीश्वरजी महाराजा की 424 वीं स्वर्गतिथि (विक्रम संवत् 1652)

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- भादवा वदी-1, मंगलवार, दिनांक 04/08/2020, समयः-20.49 बजे

समाप्तः- भादवा वदी-6/1, रविवार, दिनांक 09/08/2020, समयः-19.07 बजे

पंचक :–

आरम्भः- भादवा वदी-13, सोमवार, दिनांक 17/08/2020, समयः-6.45 बजे

समाप्तः- भादवा वदी-14, मंगलवार, दिनांक 18/08/2020, समयः-5.44 बजे

क्षमा- *क्षमा शिक्षा देती है। क्षमा दोषी की उपेक्षा नहीं है। क्षमा दोषों का स्नेहमय विसर्जन है, क्षमा को सत्य बनाएं क्षमा से जीवन अंग सजाएं, क्षमा को मित्र बनाएँ, औरों की बहुत सी बातें क्षमा कर दो लेकिन अपनी नहीं।*

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

क्रोध का सामना क्रोध से करोगे तो फिर पश्चाताप करना होगा।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

तो हम कौन सी हस्ती है ? -

अनंत वीर्यवान भगवान
श्री पार्श्वनाथ स्वामी अपने....
बहुत दु:ख देनेवालेकमठ को
क्षमा का दान ही नहीं बल्कि
समकित दान भी दिया !
अनंत शक्तिशाली ''श्री महावीर स्वामी''
आपकोशूलपाणी, संयमदेव, चंडकौशिक सर्प,
ग्वाला, गौशालक, अनार्य देशवासी आदि ने
उपसर्ग (कष्ट) करनेमें कोई कमी न रखी,
पूर्ण ताकतवान होनेपर भी आपने
इन सबकोक्षमा प्रदान की।
अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामीजी
आपनेआनंद श्रावक से क्षमाचायना की।
और 3600 साध्वी की गुरुणी आर्या
महासाध्वी चंदनबालाजी !
आपने अपनी शिष्या मृधावतीजी से क्षमापना की।
ऐसी महान आत्माओं ने भी अपनी वरिष्ठता को
गौण करते हुए क्षमा याचना की है।
''तो हम कौन सी हस्ती है''

मिच्छामि दुक्कडम् ...!

करुणा मैत्री और भक्ति
का द्योतक श्री पर्युषण महापर्व के पवित्र दिनों में
''संवत्सरीक प्रतिक्रमण की पावन पलों में''
वर्ष भर के वैर,
जहर कोविसर्जित कर सबके प्रति

वर्ष-25 श्रावण-भादवा अगस्त 2020 अंक-8

आर.एन.आई. नं. 0046570/29/30/982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 06/2018-2020

प्रति,
डॉ. सुभाष जैन (सम्पादक)
आगमोद्धारक
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456 001 (म.प्र.)
फोन : 0734 - 2558353, मोबा. 09425

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

प्रति,
श्रीमान्

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.डी. ऑफसेट प्रिंटर्स
285, एम.जी. ओड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 – 2412232, संपादक मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897